श्री

वीतराग-महादेव स्तोत्र

(मूल साथे भाषान्तर)



प्रसिद्धकर्ता.

श्री जैन आत्मानन्द सभा

भावनगर.



न्यायांभोनिधिश्रीमद्विजयानन्दसूरिभ्यो नमः कलिकालसर्वज्ञ-श्रीहेमचन्द्राचार्यरचितं

श्रीवीतराग-महादेव-स्तोत्रम्

मूल सहित भाषांतर.

प्रकाशक---

श्री जैन आत्मानन्द सभा-भावनगर.

प्रत ५००] मृत्य चार आना [नीर स. २४६९ विकम सं. १९९३ आत्म. सं. ४० इस्वी. १९३५

मुद्रक-शेठ देवचंद दामजी घी आनंद श्रीन्टींग प्रेस-भावनगर



शासनपति श्री महावीरस्वामी.



वक्तव्य.

आत्मानी गुफारूप अंतःकरणमां दिन्य ज्ञान अति सृक्ष्म छतां दिगंतगामी शक्तिवाला अनुभवाय छ, अने त महापुरुषोनी वाणी अने लेखिनीवडे कान्यरूपे बहार प्रगट थइ अन्यने आनंदरसना सागरहप बने छे के जेना श्रवण— मननथी धर्म, भक्ति, नीति अने व्यवहारनी शुद्ध भावनाओ प्रगट थाय छे.

आ श्री बीतराग-महादेव-स्तोत्र पण तेवुं ज परमात्मा परत्वे भक्ति उत्पन्न करावनार, महामंगलवारी अने बीतरागदेवनी स्तुतिरूपे छे. आ स्तोत्रना कर्त्ता कलिकाल-सर्वज्ञ श्री हेमचंद्राचार्य महाराजे पोतानी असाधारण प्रति-भाषी परमात्मानी स्तुतिरूपे अलंकृत करेल छे, जे वीश श्रक्षाश्मां पूर्ण करेल छे. के जे भक्ति निमित्ते पोतानो अनुभव श्री परमात्मा सम्मुख प्रकट करी पोताना आत्माने निर्मल बनावी रह्या छे.

आ स्तुति तो खास जीवदया प्रतिपाल श्री कुमारपाल भूपालना निमित्ते ज आचार्य महाराजे रचेल छे, के ते राजेन्द्र प्रातःकालमां निरंतर पाठ करी पछी अन्न-पाणी लेता हता. आ स्तोत्रना प्रत्येक प्रकाशमां प्रभुना अतिशयोनुं वर्णन, जगत्कर्तृत्व मिमांसा, अनेकांतवादनी विशिष्ठता आत्मनिंदा तीर्थंकर नामकर्मथी उत्पन्न थयेल लब्धिओनुं वर्णन, संगरे छे ते योगी पुरुषोने वारंवार मननीय अने ध्यान करवा लायक होइ प्रभुभित्तनो अख्द झरो आ स्तुर्तिमांथी वहे छे तेम भाविकजनो माने छे.

आवो भक्ति रस उत्पन्न करनार आ स्तुतिरूप स्तोत्र मूल संस्कृत भाषामां आ सभा तरफ्यो श्री जैन आत्मानंद शता- ब्दि सीरीझना प्रथम पुष्प मंग्लावरणरूप प्रकट थयेल छे.
जेना सपादक पूज्यपाद आचार्य श्री विजयवल्लभस्रीश्वरजीना प्रशिष्य पंग्यासजी महाराज श्री उमंगविजयजी
गिणना शिष्यरत्न मुंनराज श्री चरणविजयजी महाराज छे,
के जेअ:शा आवती साल प्रातःस्मरणीय न्यायांभोनिधि श्री
विजयानंदस्रीश्वरजी (आत्मारामजी) महाराजनी गुरुमिक्त
निमित्ते प्राताब्दि उजववा माटे अपूर्व प्रयत्न सेवी रह्या छे,
ते प्राताब्दिना संस्मरण निमित्ते ज आ प्राताब्दि सीरीझनी
योजना आचार्य श्रो विजयवल्लभसूरीश्वरजी महाराजनी
आज्ञा अने कृषाथी ज करवानं योग्य कार्य हाथ धरी, प्रकट
करवानं कार्य आ सभाने सुप्रत करेल छे.

देवल गूजराती भाषाना जाणहार भावुको आ बीतराग प्रभुनी स्तुतिनो अमृल्य लाभ भक्तिरसद्वारा लइ शके ते माटे आ स्तोत्रनुं मूल साथे सरल गूजराती भाषांतर करावी सभाए आ प्रंथ शताब्दिना जीजा पुष्प तरीके प्रसिद्ध करेल छे उंचा कोस्नली ब्ल्युपेपर उपर सुंदर शास्त्री टाइपथी सुशो-भित बाइण्डींगथी अलंकृत करेल छे. सर्व कोइ लाभ लइ शके माटे मात्र चार आना किंमत राखवामां आवेल छे.

आ प्रथमां येवलानिवासी धर्मात्मा ब्हेनो श्रीमती चंचळब्हेन, मोतीब्हेन अने बबुब्हेने आर्थिक सहाय आंपल छ जेथी तेओंने धन्यवाद घट छै.

आत्मानंद भवन वी. सं. २४६१ आ. सं. ४० सं. १९९१ ना ज्येष्ठ शुद ८ (गु६ जयंती दिन)



न्यायांभोनिधि श्रीमद् विजयानन्दसूरीश्वरजी (आत्मारामजी) महाराज.

अलंह प्रेस-लावनगरः





आचार्यश्रीविजयव्रह्मसूरिभ्यो नमः। कलिकालसर्वज्ञश्रीहेमचन्द्राचार्यविरचित

श्रीवीतराग-महादेव-स्तोत्र ।

भाषांतर सहितः



यः परात्मा परं ज्योतिः, परमः परमेष्ठिनाम् । आदित्यवर्णं तमसः, परस्तादामनन्ति यम् ॥ १ ॥

जे परमात्मा (सर्व संसारी जीवोथी श्रेष्ठ स्व-रूपवाळा) छे, केवळज्ञानमय छे, पंचपरमेष्ठीमां प्रधान छे, तेम ज जे अज्ञाननी पेले पार गयेला अने सूर्यना जेवा उद्योत करवावाळा छे एम पंडितजनो माने छे. १

सर्वे येनोदम्ल्यन्त, सम्रलाः क्वेशपादपाः । मुर्ध्ना यस्मै नमस्यन्ति, सुरासुरनरेश्वराः ॥ २ ॥ जेणे (समस्त रागद्वेषादिक) क्लेशकारी वृत्तो मूल सिंहत उखेडी नांख्या छे अने जेने सुरपति, असुरपति तथा नरपतिओ मस्तक वडे नमस्कार करे छे. २

प्रावर्त्तन्त यतो विद्याः, पुरुषार्थप्रसाधिकाः । यस्य ज्ञानं भवद्भावि–भृतभावावभासकृत् ॥ ३ ॥

जेनाथी धर्म, अर्थ, काम अने मोक्तरूपी पुरुष्पर्थने सिद्ध करनारी शब्दविद्यादिक १४ विद्याओ प्रवर्ती छे, अने जेनुं ज्ञान अतीत, अनागत अने वर्त-मान वस्तु मात्रने प्रकाश करनारुं छे. ३

यस्मिन्विज्ञानमानन्दं, ब्रह्म चैकात्मतां गतम् । स श्रद्धेयः स च ध्येयः, प्रपद्ये शरणं च तम् ॥ ४ ॥

जेनामां विज्ञान (केवळज्ञान), आनंद, (अखंड सुख) अने ब्रह्म (परमपद) ए त्रणे एकताने पामेला छे ते (सर्वज्ञ-वीतराग) श्रद्धा करवा योग्य छे अने ध्यान करवा योग्य छे. ते परमात्मानुं शरण हुं अंगीकार करुं छुं. ४

तेन स्यां नाथवाँस्तस्मै, स्पृहयेयं समाहितः । ततः कृतार्थो भ्यासं, भवेयं तस्य किङ्करः ॥ ५ ॥ (समस्त क्लेशवर्जित) ए प्रभुथी हुं सनाथ हुं. (सुरासुरवंदित ए प्रभुने ज) हुं एक मनथी बांहुं हुं. तेमनाथी ज हुं कृतकृत्य हुं अने (त्रिकाळ-वेदी एवा) ते प्रभुनो ज हुं किंकर हुं. ५

तत्र स्तोत्रेण कुर्यो च, पवित्रां स्वां सरस्वतीम् । इदं हि भवकान्तारे, जन्मिनां जन्मनः फलम् ॥ ६ ॥

ते प्रभुनी स्तुति-स्तोत्र करवावडे हुं म्हारी वाणीने पवित्र करुं छुं, कारण के आ भव अटवीमां प्राणीओने जन्म पाम्यानुं ए ज फळ छे. ई

क्वाऽहं पशोरिप पश्च—वींतरागस्तवः क च ? उत्तितीर्धुररण्यानीं, पद्भ्यां पङ्गुरिवास्म्यतः॥ ७ ॥

पशुथी पण पशु जेवो हुं क्यां ? अने (बृहस्प-तिने पण अशक्य एवी) वीतरागनी स्तुति क्यां ? तेथी पगवडे महाअटवीने उछुंघन करवा इच्छता पांगळा जेवो हुं छुं. (एटले आ म्हारुं आचरण, महा साहसरूप:होवाथी हसवा जेवुं छे.) ७

तथापि श्रद्धामुग्धोऽहं, नोपालभ्यः स्खलन्नपि । विश्रृह्खलापि वाग्वृत्तिः, श्रद्धानस्य शोभते ॥ ८ ॥ तो पण श्रद्धाथी मुग्ध एवो हुं (प्रभुनी स्तुति करवामां) स्खलना पामुं तो पण उपालंभने योग्य नथी, केमके श्रद्धाळुनी संबंध वगरनी वचन-रचना पण शोभा पामे छे. (आथी म्हारो प्रस्तुत प्रयत्न सफळ थहो.) ८

श्रीहेमचन्द्रप्रभवा—द्वीतरागस्तवादितः । कुमारपालभूपालः, प्रामोतु फलमीप्सितम् ॥ ९ ॥

श्रो हेमचंद्रसूरिए रचेला आ श्री वीतरागस्तोत्रथी कुमारपाळ भूपाळ इच्छित (श्रद्धा विशुद्धि अने कर्मक्षयरूप) फळने प्राप्त करो. ९

॥ इति प्रथमप्रकाशः ॥



मुळ ४ अतिश्रय वर्णनरूप वीजा प्रकाशः

प्रियङ्गस्फटिकस्वर्ण-पद्मरागाञ्जनप्रमः । प्रमो ! तद्माधौतशुचिः, कायः कमित्र नाक्षिपेत् ? ॥१॥

हे प्रभु ! प्रियंगुवत् (नीलः), स्फटिकवत् (उ-ज्वळः,) स्वर्णवत् (पीतः), पद्मरागवत् (रकः) अने अंजनवत् (श्यामः) वर्णनी कांति समान अने घोया विना ज सदा पवित्र थएळो आपनो देहः, देव मनु-ष्यादि कोने चिकित नथी करतो ? सर्वने करे हेः १

मन्दारदामवनित्य-मवासितसुगन्धिनि । तवाङ्गे भृङ्गतां यान्ति, नेत्राणि सुरयोपिताम् ॥२॥

कल्पवृत्तनी माळानी जेम सदा स्वभावथी ज सुगंघी युक्त आपना अंग उपर देवांगनाना नेत्रो भ्रमर-पणाने पामे हे. २

दिव्यामृतरसाखाद-योपप्रतिहता इव । समाविशन्ति ते नाथ !, नाङ्गे रोगोरगवजाः ॥३॥

हे नाथ ! दिव्य अमृतरसना आस्वादनी पु-ष्टिथी जाणे पराभव पामेला होय तेम कास श्वासाain Education International Private & Personal Use Onlyww.jainelibrary.org दिक रोगरूपी सर्पनो समृह आपना देहमां व्यापी शकतो नथी, (आप सदा रोग रहित ज छो.) ३

त्वय्याद्शतलालीन–प्रतिमाप्रतिरूपके । क्षरत्स्वेदविलीनत्व–कथाऽपि वपुषः कुतः १।। ४ ॥

आप द्र्पण्नी अंद्र प्रतिविवित थयेला रूपनी समान निर्मळ होवाथी आपनुं शरीर झरता परसे-वाथी व्याप्त थयुं छे एवी कथा पण क्यांथी होय? ४

न केवलं रागमुक्तं, वीतराग! मनस्तव । वपुःस्थितं रक्तमपि, श्लीरधारासहोदरम् ।। ५ ॥

हे बीतराग ! केवळ आपनुं मन राग रहित थयेलुं छे एम नथी, परंतु आपना शरीरमां रहेलुं रक्त (रुधिर) दृधनी धारा जेवुं धोळुं के, एटले आपना रुधिरमांथी पण स्वाभाविक राग-रंग-रताश जती रही के. ५

जगद्विलक्षणं किं वा, तवान्यद्वक्तमीक्महे ?। यदविस्नमबीभत्सं, शुभ्रं मांसमपि प्रभो !।।६॥

वळी जगतथी विलत्तण एवं आपनुं बीजुं वर्णन अमे शुं करी शकीए? कारण के हे प्रभु! आपनुं मांस पण दुर्गेघ रहित, (परम सुगंधिवाळुं) दुगंच्छा र<mark>हित</mark> अने (गायना दूध जेवुं) घोळुं छे. ६

जलस्थलसमुद्भुताः, संत्यज्य सुमनःस्रजः । तत्र निःश्वाससौरभ्य-मनुयान्ति मधुत्रताः ॥ ७॥

हे वीतराग ! भ्रमराओ, जळनी अंदर उत्पन्न थएला अने स्थलमां उत्पन्न थएला पुष्पोनी माळाओ तजीने आपना नि:श्वासनी खुशबो लेवा (आपना वदन-कमळ पासे) आवे छे. ७

लोकोत्तरचमत्कार-करी तत्र भवस्थितिः । यतो नाहारनीहारो, गोचरश्चर्भचक्षुषाम् ॥८॥

हे प्रभु ! आपनी संसारस्थिति लोकोत्तर (अपूर्व) चमत्कारने करवावाळी हे, केमके आपना आहार अने नीहार चर्मचश्चवाळा मनुष्यो जोइ शकता नथी. ८

॥ इति द्वितीयप्रकाशः ॥

कर्मक्षयोत्पन्न ११ अतिशय वर्णनरूप त्रीजो प्रकाश.

सर्वाभिमुख्यतो नाथ !, तीर्थकृत्नामकर्मजात् । सर्वथा सम्मुखीनस्त्व-मानन्दयसि यत्प्रजाः ॥१॥

तीर्थंकरनामकर्मजनित सर्वाभिमुख्य नामना अतिशयथी हे नाथ! आप केवळज्ञानना प्रकाशवडे सर्वथा सर्वे दिशाए सन्मुख इतां देव, मनुष्यादिक प्रजाने प्रतिज्ञण (परम) आनंद प्रमाडो हो. १

यद्योजनप्रमाणेऽपि, धर्मदेशनसञ्चनि । संमान्ति कोटिशस्तिर्यग्नृदेवाः सपरिच्छदाः ॥२॥

एक योजनप्रमाण धर्मदेशनाना स्थानरूप सम-वसरणमां परिवार सहित कोडो देवताओ, मनुष्यो अने तिर्यचो आपनाः प्रभावथी सुखपूर्वक समाइ जाय छे.२

तेषामेव स्वस्वभाषा-परिणाममनोहरम् । अप्येकरूपं वचनं, यत्ते धर्मावबोधकृत् ॥ ३॥

आपनुं एक सरखुं वचन-उपदेश देव, मनुष्य अने तिर्यचोने पोतपोतानी भाषामां सुखे समजी शकाय एवो छे अने धर्म संबंधी बोधने करावनार होय छे. ३ साञ्जेपि योजनशते, पूर्वोत्पन्ना गदाम्बुदाः । यदञ्जसा विलीयन्ते, त्वद्विहारानिलोर्मिभिः ॥४॥

आपना विहाररुपी पवननी लहेरीओथी सवासी (१२५) योजनमां पूर्वे उत्पन्न थयेळा रोग-ह्मपी वादळाओ तत्काळ अदृश्य थइ जाय छे. ४

नाविर्भवन्ति यद्भूमौ, मूषकाः शलभाः शुकाः । क्षणेन क्षितिपक्षिप्ता, अनीतय इवेतयः ।।५।।

राजाए दूर करी दीघेळी अनीतिनी जेम भूमि उपर उंदर, तीड अने शुको विगेरे धान्यने नुकशान करनारा उपद्रवी ज्यां आप विचरी छो त्यां तत्काळ दूर थइ जाय छे. ५

स्रीक्षेत्रपद्रादिभवो, यद्वैराग्निः प्रशाम्यति । त्वत्कृपापुष्करावर्त्त-वर्षादिव भ्रवस्तले ॥६॥

आपनी कृपारूप पुष्करावर्त मेघनी वृष्टिथी ज होय तेम ज्यां आप चरण घरो को त्यां स्त्री, चेत्र अने सीमाडादिकथी उत्पन्न थयेळो विरोधरूपी अग्नि तमाम शमी जाय छे. ई त्वत्त्रभावे अवि भ्राम्य-त्यशिवोच्छेदडिण्डिमे । सम्भवन्ति न यन्नाथ !, मारयो भ्रवनारयः ॥७॥

हे नाथ ! उपद्रवोनो उच्छेद करवा ढोल वगाडवा जेवो आपनो प्रभाव (प्रताप) भूमी उपर प्रसरवाथी (दुष्ट व्यन्तर, शाकिनी प्रमुखथी उत्पन्न थता) मारी (प्लेग) विगेरे जगतना काळ जेवा रोगो–उपद्रवो पेदा ज थता नथी ७

कामवर्षिणि लोकानां, त्विय विश्वेकवत्सले । अतिवृष्टिरवृष्टिर्वा, भवेद्यकोपतापकृत् ॥ ८॥

विश्वोपकारी अने लोकोना मनवांछितदायक आप विद्यमान होवाथी लोकोने संतापकरनारी अति-वृष्टि के अनावृष्टि थती नथी. ८

स्वराष्ट्रपरराष्ट्रेभ्यो, यत्क्षुद्रोपद्रवा द्वतम् । विद्रवन्ति त्वस्त्रभावात् , सिंहनादादिव द्विपाः ॥९॥

स्वचक अने परचक (स्वराज्य अने परराज्य) थी थयेळा क्षुद्र उपद्रवो सिंहनादथी जेम हाथीओ नाशी जाय छे तेम आपना प्रभावथी तत्काळ नष्ट थइ जाय छे. ९ यत्क्षीयते च दुर्भिक्षं, क्षितौ विहरति त्वयि । सर्वाद्भुतप्रभावाट्ये, जङ्गमे कल्पपादपे ।। १० ॥

सर्व अद्भुत प्रभावशाळी अने जंगम कल्प-वृक्ष समान आपना पृथ्वी उपर विचरवाथी दुर्भिक्ष दुष्काळ दूर थइ जाय छे. १०

यन्मुर्ध्नः पश्चिमे भागे, जितमार्त्तण्डमण्डलम् । मा भृद्वपुर्दुरालोक—मितीवोत्पिण्डतं महः ॥११॥

सूर्यथी पण अधिक प्रभावाळुं भामंडळ आपनुं शरीर जोवामां कोईने अडचण (आड) न आवे तेटळा ज माटे देवोए ते आपना मस्तकनी पाछळ स्थापेळुं छे. ११

स एष योगसाम्राज्य-महिमा विश्वविश्वतः। कर्मक्षयोत्थो भगवन् !, कस्य नाश्चर्यकारणम् ?।।१२॥

हे भगवन् ! घाती कर्मना क्षयथी उत्पन्न थ-येलो, लोक प्रसिद्ध योगसाम्राज्यनो महिमा कया सचेतन प्राणीने आश्चर्य पमाडतो नथी ? अर्थात् सर्व सचेतन प्राणी वर्गने आश्चर्यकारी थाय हे १२ अनन्तकालप्रचित-मनन्तमि सर्वथा । त्वत्तो नान्यः कर्मकक्ष-मुन्मूलयति मूलतः ॥१३॥

अनन्तकाळथी उपार्जन करेल अने अन्त विनानुं कर्मवन आप सिवाय बीजो कोइ सर्व प्रकारे मूळथी उच्छेदी शकतो नथी. १३

तथोपाये प्रवृत्तस्त्वं, क्रियासमभिहारतः । यथानिच्छन्नुपेयस्य, परां श्रियमशिश्रियः ॥१४॥

हे प्रभु! चारित्ररूप उपायमां पुनः पुनः अभ्या-सथी आप परला वधा प्रवृत्त थयेला छो के परम-पदनी श्रेष्ठ संपदारूप तीर्थकरपद्वीने नहि इच्छता छतां पण आपने प्राप्त थइ छे. १४

मैत्रीपवित्रपात्राय, मुदितामोदशालिने । कृपोपेक्षाप्रतीक्षाय, तुभ्यं योगात्मने नमः ॥१५॥

मेत्री भावनाना पवित्र स्थानरूप, पुष्ट प्रमोद् भावनाथी शोभित तेम ज करुणा अने माध्यस्थ्य (भावना) वडे पूज्य एवा योगस्वरूपी आपने अमारो नमस्कार थाओ. १५

।। इति तृतीयप्रकाशः ।।

देवकृत अतिशय वर्णनरूप चोथो प्रकाश.

मिथ्यादशां युगान्तार्कः, सुदशाममृताञ्जनम् । तिलकं तीर्थकुछक्ष्म्याः, पुरश्चकं तवैधते ।।१।।

मिथ्यादृष्टिओने प्रलयकाळना सूर्यनी जेम संताप कारी अने सम्यग्दृष्टिओने अमृतना अंजननी जेम शान्तिकारी एवं तीर्थकरलक्ष्मीना तिलक समान धर्म-वक्र आपनी आगळ दीपी रह्यु छे. १

एकोऽयमेव जगति, स्वामीत्याख्यातुमुच्छ्रिता । उचैरिन्द्रध्वजव्याजा—त्तर्जनी जंभविद्विषा ॥२॥

जगतमां आ वीतराग ज एक स्वामी छे, एम जणाववा माटे इंद्रे उंचा इंद्रध्वजना मिषथी पोतानी तर्जनी अंगुली उंची करी छे, एम जणाय छे. २

यत्र पादौ पदं धत्त—स्तव तत्र सुरासुराः । किरन्ति पङ्कजव्याजा—च्छ्रियं पङ्कजवासिनीम् ॥३॥

ज्यां आपना चरण पडे छे त्यां देव अने दान-वो नव सुवर्णकमळना व्याज्ञथी कमळमां स्थिति करनारी लक्ष्मीने विस्तारे छे. ३

दानशीलतपोभाव-भेदाद्धर्भं चतुर्विधम् । मन्ये युगपदाख्यातुं, चतुर्वेक्त्रोऽभवद्भवान् ॥४॥

दान, शोल, तप अने भावनारूप चार प्रका-रना धर्मने एकी साथे कहेवा माटे आप चतुर्भुख थया क्रो एम हुं मानुं क्लं. ४

त्विय दोषत्रयात्रातुं, प्रवृत्ते भ्रवनत्रयीम् । प्राकारत्रितयं चक्रु—स्त्रयोऽपि त्रिदिवौकसः ॥५॥

राग, द्वेष अने मोहरूप तथा मन, वचन अने काया संबंधी त्रण दोषथी त्रिभुवनने बचाववाने आप प्रवृत्त थयेळ होवाथी त्रण प्रकारना (वैमानिक, ज्यातिषी अने भुवनपति) देवोए रत्न, सुवर्ण अने रूप्यमय त्रण गढनी रचना करी छे. ५

अधोमुखाः कण्टकाः स्यु-र्धात्र्यां विहरतस्तव । भवेयुः सम्मुखीनाः किं, तामसास्तिग्मरोचिषः ? ॥६॥

पृथ्वी उपर आप विचरो छो त्यारे कांटा पण उंघा पडी जाय छे. सूर्य उदय पामे छे त्यारे घूवड अथवा अंधकारना समृह शुंटकी शके खरा ? ई केशरोमनखदमश्रु, तवावस्थितमित्ययम् । बाह्योऽपि योगमहिमा, नाप्तस्तीर्थकरैः परैः ।।७।।

केश, रोम, नख अने दाढी-मूक्क दीक्षा ग्रहण अवसरे जेवां समारेळां होय तेवां ज रहे, जरा पण क्षे निह एवो आ बाह्य (प्रगट देखातो) योग म-हिमा पण अन्य हरिहरादिक देवाए प्राप्त कर्यों नथी यारे अंतरंग (सर्वामिमुख्यतादि) योगनी वात तो दूर ज रही. ७

शब्दरूपरसस्पर्श-गन्धाख्याः पश्च गोचराः । भजन्ति प्रातिकृल्यं न, त्वदंग्रे तार्किका इव ॥ ८ ॥

हे बोतराग ! बौद्ध, नैयायिकादि तर्कवादी-ओनी जेम शब्द, रूप, रस, गंध अने स्पर्शरूप पांचे इंद्रियोना विषयो आपनी आगळ अनुकूळताने भजे छे-प्रतिकूळपणे वर्तता नथी. ८

त्वत्पादावृतवः सर्वे, युगपत्पर्युपासते। आकालकृतकन्दर्प-साहाय्यकभयादिव ॥ ९॥

अनादिकाळथी आपना विरोधी कामदेवने सहा-यक थयाना भयथी ज होय तेम समकाळे सघळी ऋतुओ आवी आपना चरणकमळने सेवे छे. ९ सुगन्ध्युदकवर्षेण, दिव्यपुष्पोत्करेण च । भावित्वत्पादसंस्पर्शा, पूजयन्ति भ्रुवं सुराः ॥ १० ॥

जे भूमिने आपनो चरणस्पर्श थवाना छे ते भूमिने देवताओ सुगन्धी जळनी वृष्टिवडे अने दिव्य पंचवर्णवाळा पुष्पना पुंजवडे पूजे छे. १०

जगत्प्रतीक्ष्य ! त्वां यान्ति, पक्षिणोऽपि प्रदक्षिणम् । का गतिर्महतां तेषां, त्विय ये वामवृत्तयः ?।। ११ ॥

हे त्रेलोक्यपूज्य! (अज्ञान) पक्षीओ पण आ-पने प्रदक्षिणा दे छे, तो पछी विवेकी अने बुद्धिशाली होवा छतां आपना प्रति प्रतिकूळ वर्त्ते छे एवा मान-वीओनी शी गति थशे ? ११

पञ्चेन्द्रियाणां दौःशील्यं, क भवेद्भवदन्तिके ?। एकेन्द्रियोऽपियन्मुश्च—त्यनिलः प्रतिकृलताम् ॥१२॥

संज्ञोपंचेन्द्रिय मनुष्यादिकनुं दुष्टपणुं आपनी पासे क्यां रहे ? केमके एकेन्द्रिय एवा पवन पण प्रतिक्ळताने तजी दे छे (तो बीजानुं कहेवुं ज शुं ?) मतल्लव ए के पवन पण सुखकारी ज वाय छे. १२ Jain Education International Private & Personal Use Onlyww.jainelibrary.org मुर्झा नमन्ति तरवस्त्वन्माहात्म्यचमत्कृताः । तत्कृतार्थं शिरस्तेषां, व्यर्थं मिथ्यादशां पुनः ॥१३॥

हे प्रभु ! वृक्षो पण आपना माहातम्यथी चमत्कार पामीने आपने मस्तकवडे नमस्कार करे छे. (एकें-द्रियोने भय, राग विगेरे संज्ञा होय छे तेम चमत्कार पण संभवे छे, तेथी आपना विहार वखते ते वृक्षो आपने जोइने नम्र थाय छे) तेथी तेमना मस्तक इतार्थ छे, अने मिथ्यादृष्टिओ आपने नमता नथी तेथी तेआना मस्तक द्यर्थ छे. १३.

जघन्यतः कोटिसङ्ख्यास्त्वां सेवन्ते सुरासुराः । भाग्यसंभारलभ्येऽर्थे, न मन्दा अप्युदासते ॥१४॥

हे प्रभु ! आपने जघन्यथी पण एक करोड देवे। अने असुरो सेवे छे केमके पुण्यना समूहथी पामी शकाय तेवा पदार्थमां मंद प्राणीओ पण उदासीन रहेता नथी, तो पद्घी देवताओं केम आछसु थाय ? १४

इति चतुर्थः प्रकाशः. ४.

अथ पंचम प्रकाश ५.

शेष अतिशयानुं वर्णन.

गायिनवालिविरुतै—र्नृत्यिनव चलैर्दितैः । त्वद्गुणैरिव रक्तोऽसौ, मोदते चैत्यपादपः ।। १ ॥

हे प्रभु ! आपना शरीरमानथी बारगुणा आ चैत्यवृक्ष ममराना शब्दवडे जाणे गायन करतो होय, वायुथी चळायमान थतां पांदडाओवडे जाणे नृत्य करता हाय अने आपना गुणोवडे जाणे रक्त (रातो) थयो होय तेम हर्ष पामे १.

आयोजनं सुमनसो—ऽधस्तान्निक्षिप्तवन्धनाः । जानुद्धाः सुमनसो, देशनोर्व्या किरन्ति ते ॥ २ ॥

हे प्रभु ! आपनी देशना भूमि (समवसरण) मां देवताओं एक योजन सुधी नीचा डींटवाळा जातुं-प्रमाण पुष्पोने विखेरे छे-वरसे छे २.

मालवंकैशिकीमुख्य-ग्रामरागपवित्रितः । तव दिव्यो ध्वनिः पीतो, हर्षोद्ग्रीवैर्मृगैरपि ॥ ३ ॥ हे प्रभु ! वैराग्यने दीपन करनारा मालव, कैशिकी विगेरे ब्राम पर्यंत रागोवडे पवित्र थयेळो आपनो दिन्य ध्वनि हर्षथो उंची डोकवाळा मृगोप पण पीधो (सांभळ्यो) छे. ३.

तवेन्दुधामधवला, चकास्ति चमरावली । इंसालिरिव वक्त्राब्ज-परिचर्यापरायणा ।। ४ ।।

हे प्रभु ! चंद्रना किरणो जेवो उज्वल चमरावलो (चामरनी श्रेणी) जाणे के आपना मुखकमळनी सेवामां तत्पर थयेलो हंसनी श्रेणी होय तेम शामे ले. ४.

मृगेन्द्रासनमारूढे, त्विय तन्वति देशनाम् । श्रोतुं मृगाः समायान्ति, मृगेन्द्रमिव सेवितुम् ॥ ५ ॥

हे प्रभु ! ज्यारे आप सिंहासन उपर आरूड थहने देशना आपो छो त्यारे आपनी देशना सांभ-ळवा माटे मृगलाओ पण आवे छे. ते जाणे के मृगेन्द्र (पोताना स्वामी) नी सेवा करवा आवता होय तेम छागे छे. ५.

भासां चयैः परिवृतो, ज्योत्स्नाभिरिव चन्द्रमाः । चकोराणामिव दृशां, ददासि परमां मुदम् ॥ ६॥ हे प्रभु ! ज्योत्स्नावडे परिवरेलो चंद्र जेम चकार पक्षीना नेत्रोने आनंद आपे छे तेम भामंडळवडे परि-वरेला आप सज्जनोना नेत्रोने अत्यंत आनंद आपो हो. ६

दुन्दुभिर्विश्वविश्वेश!, पुरो व्योम्नि प्रतिध्वनन् । जगत्याप्तेषु ते प्राज्यं, साम्राज्यमिव शंसति ॥ ७।

हे सर्व विश्वना (त्रण जगतना) स्वामी! विद्वारमां आपनी आगळ आकाशमां रहीने शब्द करतो देव-दुंदुंभि जाणे के जगतमां आप्त पुरुषोमां आपनुं ज मोटुं साम्राज्य कहेतो होय तेम शोभे छे. (सर्व देवोमां आपनुं चक्रवर्तीपणुं जणांचे छे.) ७.

तबोर्ध्वमुर्ध्व पुण्यर्द्धि—ऋमसब्रह्मचारिणी । छत्रत्रयी त्रिभ्रवन—प्रभुत्वप्रौढिशंसिनी ॥ ८॥

हे प्रभु! (सम्यक्त्व, देशविरति, सर्वविरिति, तोर्थंकरनामकर्म उपार्जन, स्वर्गगमन, पुन: मनुष्यं भवमां सर्वविरति, अपूर्वकरण, क्षपकश्रेणि, शुक्रध्यान, घातिकर्मक्षय, केवळज्ञाननी प्राति, तोर्थंकरनी संपदानो भोग अने छेवट मोत्तगमन-आ प्रमाणे) पूर्ण समृद्धिना अनुक्रमनी जेवा आपना मस्तक उपर

उपराउपरी रहेला त्रण इत्रो त्रण जगतना प्रभु-पणानो मोटाईने कहेता होय तेम शोभे छे. ८.

एतां चमत्कारकरीं, प्रातिहार्यश्रियं तव । चित्रीयन्ते न के दृष्ट्वा, नाथ! मिथ्यादशोऽपि हि ?।।९॥

हे नाथ! चमत्कारने करनारी आपनी प्रातिहार्य लक्ष्मीने जोइने क्या मिथ्यादिष्ट जनो पण आश्चर्य नथी पामता? सर्व जनो आश्चर्य पामे छे. (जो के तीर्थकरोने अनंत अतिशयो होय छे तो पण बाळ-जनोना बोधने माटे स्थूळ दृष्टिथी चोत्रीश अतिशयो कहेवामां आवे छे.) ९.

इति पंचम प्रकाशः ५.

अथ पष्टप्रकाशः

लावण्यपुण्यवपुषि, त्वयि नेत्रामृताञ्जने । माध्यस्थ्यमपि दौःस्थ्याय, कि पुनर्द्वेषविप्लवः? ॥१॥

हे प्रभु ! तमे लावण्यवहे पवित्र शरीरवाळा होवाथी प्राणीओना नेत्रोने अमृतना अंजन समान छो; हतां तमारे विषे मध्यस्थपणुं धारण करवुं (पटले के बीजा हरिहरादिक देव जेवा आप पण देव छो एम जे मानवुं) ते पण मोटा खेदने माटे छे; तो पछी आपने विषे द्वेषभाव राखवो ते ते। अत्यंत खेदने माटे होय तेमां शुं कहेवुं ? १.

तवापि प्रतिपक्षोऽस्ति, सोऽपि कोपादिविप्छतः । अनया किवदन्त्यापि, किं जीवन्ति विवेकिनः?॥ २॥

हे नाथ ! आपने पण शत्रु छे अने ते पण कोधा-दिक कषायथी न्याप्त छे. आवी वार्ताप करीने पण छुं विवेकी पुरुषो जीवी शके ? न ज जीवे. (नहीं सांभळवा योग्य वचन सांभळवा करतां मरण ज क्रोष्ठ छे.) २. विपक्षस्ते विरक्तश्रेत्, स त्वमेवाथ रागवान् । न विपक्षो विपक्षः र्कि, खद्योतो द्युतिमालिनः ? ॥ ३ ॥

जो कदाच आपनो शत्रु विरागी होय तो ते विरागी आप ज हो (तथी तेवो शत्रु होई शके नहीं ामत्र ज होय) अने जो ते आपनो शत्रु रागी होय तो पण ते अणघटतो शत्रु होइ शके नहीं. शुं खद्योत सूर्यनो शत्रु होइ शके ? न ज होय (कारण के समान पराक्रमी जशत्रु होइ शके छे) ३.

स्पृहयन्ति त्वद्योगाय, यत्तेऽपि लवसत्तमाः । योगमुद्रादरिद्राणां, परेषां तत्कथैव का ? ।। ४ ॥

हे प्रभु ! ते छवसत्तम (अनुत्तरिवमानवासी) देवो पण आपना योगनी स्पृद्दा करे छे. तो योगमुद्राए (रजोहरणादिके) करीने रहित अन्यदर्शनीओने ते योगमार्गनी कथा ज शानी होय ? न ज होय. ४.

त्वां प्रपद्यामहे नाथं, त्वां स्तुमस्त्वामुपास्महे । त्वत्तो हि न परस्त्राता, किं ब्रूमः? किम्र कुर्महे ? ॥ ५ ॥

हे नाथ ! अमे आपने अंगीकार करीए छीए, आपनी स्तुति करीए छीए, आपनी उपासना (सेवा) करीए छीए, आपनाथी बीजो कोई (देवादिक) रक्षण करनार नथी आथी बीज़ुं अमे हों बोलीए ? अने हों करीए ? ५.

स्वयं मलीमसाचारैः, प्रतारणपरैः परैः । वंच्यते जगदण्येतत्, कस्य पूत्कुर्महे पुरः १ ॥ ६ ॥

पोते मिलन आचारवाळा अने बीजाने ठगवामां तत्पर एवा अन्य देवो आ आखा जगतने ठगे छे. तो हे नाथ! अमे कोनी पासे आ पोकार करीए ? (आप सिवाय बीजा कोईनी पासे कहीए तेवुं नथी.) ६.

नित्यमुक्तान् जगज्जन्म-क्षेमक्षयकृतोद्यमान् । वन्ध्यास्तनन्धयप्रायान्, को देवांश्वेतनः श्रयेत् १॥७॥

निरंतर मुक्त तथा जगतनी उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय करवामां उद्यमवान एवा वंध्या पुत्र समान देवोने कोण चेतनावाळो प्राणी आश्रय करे? (देव तरिके माने?) ७.

कृतार्था जठरोपस्थ-दुःस्थितैरपि देवतैः। भवादशानिह्नुवते, हाहा ! देवास्तिकाः परे ॥ ८॥ हे देव ! बीजा आस्तिको (ब्राह्मणादि) जठर अने जपस्थ (क्षुघा अने कामविकार) थी दुःखी थयेळा देवोवडे पण कृतार्थ थइ आपना जेवाः वोतराग देवोने क्रुपावे छे-निषेध करे छे, ते अति खेदनी बात छे. ८.

खपुष्पप्रायमुत्प्रेक्ष्य, किश्चिन्मानं प्रकल्प्य च । संमान्ति देहे गेहे वा, न गेहेनर्दिनः परेः ॥ ९॥

हे प्रभु ! गेहेनदीं (घरमां ज श्रुरवोर) एवा केटलाक लोको आकाश-पुष्पनी जेवी मिथ्या उत्प्रेक्षा (तर्क) करीने, अने कांइक प्रमाणनी कल्पना करीने पोताना देहमां अने घरमां माता नथी (अमारो ज धर्म श्रेष्ठ के एम मानी मस्तनी जेम रहे छे.) ९.

कामरागस्नेहरागा-वीषत्करनिवारणौ । दृष्टिरागस्तु पापीयान्, दुरुच्छेदः सतामपि ॥ १० ॥

हे प्रभु ! कामराग अने स्नेहराग ए बन्नेतुं निवा-रण करबुं सहेलुं छे परन्तु (मारी मान्यता ज सत्य छे एवा प्रकारना) दृष्टिराग तो अत्यंत पापी छे. तेने सत्पुरुषो पण दु:खे करीने छेदी शके छे. १० Jain Education International Private & Personal Use Onlyww.jainelibrary.org प्रसन्नमास्यं मध्यस्थे, दशौ लोकम्पृणं वचः । इति प्रीतिपदे बाढं, मुढास्त्वय्यप्युदासते ॥ ११॥

हे प्रभु! आपनुं मुख प्रसन्न छे, बन्ने नेत्रो मध्यस्थ (विकार रहित) छे अने आपनुं वचन लोकोने प्रीतिकारक छे. आ प्रमाणे आप सर्वने प्रीति करनार छतां पण मृढ लोको आपना उपर उदासीन रहे छे. ११.

तिष्ठेद्वायुर्द्रवेदद्रि—र्ज्वलेज्जलमपि क्वचित् । तथापि ग्रस्तो रागाधै—र्नाप्तो भवितुमईति ।। १२ ॥

दे जिनेन्द्र ! कदाच वायु स्थिर थइ जाय, पर्वत गळी जाय अने पाणी पण अमिनी जैम जाज्वस्यमान थाय; तो पण जे (देवो) रागद्वेषादिकवडे स्याप्त होय ते आप्त (हितकारक) थवाने लायक नथी अर्थात् वीतराग सिवाय बीजा कोइ सत्य देव स्रे ज नहीं. ११.

इति पष्टप्रकाशः

अथ सप्तमप्रकाशः

हवे जगत्कर्तृनिरास नामनो सातमो प्रकाश कहे छे.

धर्माधर्मी विना नाङ्गं, विनाङ्गेन मुखं कुतः ? । मुखाद्विना न वक्तृत्वं, तच्छास्तारः परे कथम् ? ।। १ ।।ः

धर्म अने अधर्म (पाप-पुण्य) विना शरीर होइ शकतुं नथी. शरीर विना मुख क्याथी होय ? अने मुख विना वकापणुं संभवतुं नथी; तेथी अन्य देवो (के जेओ नित्य मुक्त मानेळा छे अने शरीरादिक रहित छे तेओ) उपदेशदाता शी रीते होइ शके ? १.

अदेहस्य जगत्सर्गे, प्रवृत्तिरिप नोचिता । न च प्रयोजनं किचित्, स्वातन्त्र्यान्न पराज्ञ्या १॥२॥

वळी शरीर रहित देवनी जगतने उत्पन्न करवामां प्रवृत्ति पण उचित नथी. तेम ज स्वतंत्रपणु होवाथी तेवी प्रवृत्तिमां कांइ पण प्रयोजन नथी अने ते बीजानी आज्ञाथी प्रवर्त्तता पण नथी. २.

क्रीडया चेत्प्रवर्त्तेत, रागवान् स्यात् कुमाखत् । कृपयाऽथ सृजेत्तर्हि, सुख्येव सकलं सृजेत् ॥ ३॥ जो कदाच ते देव कीडाथी ज जगतनी सृष्टि विगे-रेमां प्रवर्त्ते छे एम कोइ कहे तो तेने बाळकनी जेम रागवान कहेवो जोइहो, अने जो ऋपाथी सर्जे छे एम कहेता हो तो तेणे समग्र जगतने सुखी ज सर्जवुं जोइए. ३.

दुःखदौर्गत्यदुर्थोनि—जन्मादिक्केशविह्वलम् । जनं तु सृजतस्तस्य, कृपालोः का कृपालुता ?।। ४।।

परंतु ते तो इष्ट वियोगादिक दु:ख, दरिद्रता, दुष्ट-योनि अने जन्ममरणादिक क्लेशवडे व्याप्त एवा जनोने सर्जे छे; तेथी ते कृपाळुनी कइ कृपाळुता समजवी ? ४.

कर्मापेक्षः स चेत्तर्हि, न स्वतंत्रोऽसदादिवत् । कर्मजन्ये च वैचित्र्ये, किमनेन शिखण्डिना ? ॥५॥

जो कदाच तमे एम कहेशो के ते देव तो प्रा-णीओना कर्मने अनुसारे सर्व करे छे, तो ते देव आपणी जेम स्वतंत्र नथी. जो कर्मथी उत्पन्न थयेळुं विचित्रपणुं मानता हो तो आ नपुंसक जेवा इश्व-रने मानवाथी शुं फळ ? ५. अथ स्वभावतो वृत्ति-रवितर्क्या महेशितुः । परीक्षकाणां तर्ह्येष, परीक्षाक्षेपडिण्डिमः ॥ ६ ॥

जो कदाच " ईश्वरनो जगत सृष्टि संबंधी स्वभा-विक प्रवृत्ति बीजा काइना तर्कमां आवी शके तेवी नथी " एम कहेशा तो परीक्षकाने परीक्षानो निषेध करनार आ डिंडिम (ढोळ) वगडाववा जेवुं छे. ई.

सर्वभावेषु कर्तृत्वं, ज्ञातृत्वं यदि सम्मतम् । मतं नः सन्ति सर्वज्ञा, मुक्ताः कायभृतोऽपि च ॥ ७ ॥

जो " सर्व पदार्थोंनुं जाणवापणुं ए ज कर्तापणुं छे " एम तमे मानता हो तो ते वात अमारे पण मान्य ज छे; केमके अमारा जिनशासनमां शरीरधारी अरिहंत सर्वज्ञ (जोवन मुक्त) अने शरीर रहित सिद्ध (विदेह मुक्त) एम वे प्रकारना सर्वज्ञो छे ७.

सृष्टिवादकुहेवाक-मुन्मुच्येत्यप्रमाणकम् । त्वच्छासने रमन्ते ते, येषां नाथ ! प्रसीदसि ।। ८ ॥

हे नाथ! जेमना उपर आप प्रसन्न थया छो ते पुरुषो उपर कह्या प्रमाणे प्रमाण रहित सृष्टिवादना कदाग्रहने छोडीने आपना शासनमां ज आनंद पामे छे. ८. इति सप्तमप्रकाशः

अथ अष्टम प्रकाश.

हवे एकांतपक्षनिराश नामना आठमो प्रकाश कहे छे-

सत्त्वस्यैकान्तनित्यत्वे, कृतनाशाकृतागमौ । स्यातामेकान्तनाशेऽपि, कृतनाशाकृतागमौ ॥ १॥

हे प्रभु ! पदार्थनुं एकांत नित्यपणुं मानवामां कत-नाश (करेळानो नाश) अने अकतागम (नहीं करेळानी प्राप्ति) नामना बे दोष ळागे छे, तेमज पदार्थनुं एकांत अनित्यपणुं मानवामां पण कृतनाश अने अकृतागम नामना बे दोष ळागे छे. १.

आत्मन्येकान्तनित्ये स्यान भोगः सुखदुःखयोः । एकान्तानित्यरूपेऽपि, न भोगः सुखदुःखयोः ॥२॥

आत्माने एकांत नित्य मानवाथी सुखदु:खनो भोग घटी शकतो नथी अने आत्माने एकांत अनित्य मानवाथी पण सुखदु:खनो भोग घटतो नथी. २.

पुण्यपापे वन्त्रमोक्षी, न नित्यैकान्तदर्शने । पुण्यपापे वन्त्रमोक्षी, नानित्यैकान्तदर्शने ।। ३ ॥ पकांत नित्यपक्षमां पुण्य--पाप तथा बंध-मोक्ष संभवता नथी, तेम ज एकांत अनित्य पक्षमां पण पुण्य-पाप तथा बंध-मोक्ष संभवता नथी. ३.

क्रमाक्रमाभ्यां नित्यानां, युज्यतेऽर्थिकिया न हि । एकान्तक्षणिकत्वेऽपि, युज्यतेऽर्थिकिया न हि ॥ ४ ॥

जीवाजीवादिक पदार्थोंने एकांत नित्य मानीए ता क्रमे अथवा अक्रमे तेमनी अर्थ क्रिया घटी शक्से नहीं. ते ज रीते एकांत अनित्य मानवामां पण अर्थ क्रिया थइ शक्से नहीं. ४.

यदा तु नित्यानित्यत्व—रूपता वस्तुनो भवेत् । यथात्थ भगवन्नैव, तदा दोषोऽस्ति कश्चन ॥ ५॥

तेथो करीने हे भगवन् ! जेम आपे कह्युं छे. तेम ज्यारे पदार्थनुं नित्यानित्यपणुं मानीए, त्यारे कोइ पण जातनो दोष आवतो नथी. ५.

गुडो हि कफहेतुः स्यानागरं पित्तकारणम् । द्वयात्मनि न दोषोऽस्ति, गुडनागरभेषजे ॥ ६॥

जेमके गोळ कफनो हेतु छे अने सुंठ पित्तनुं कारण हे. ते बन्ते गोळ अने सुंठ रुप औषधने विषे कफ के पित्त को दोव नथी. परंतु उलटुं पुष्टिनुं कारण थाय छे. ६. द्वयं विरुद्धं नैकत्राऽ-सत्प्रमाणप्रसिद्धितः। विरुद्धवर्णयोगो हि, दृष्टो मेचकवस्तुषु ।। ७॥

ते ज प्रमाणे घटादिक कोइ एण एक वस्तुमां नित्यता अने अनित्यता ए बन्ने मानवाथी कांइ एण विरोध आवतो नथी। केमके तेवा विरोध (काई एण प्रत्यक्षादिक) विद्यमान प्रमाणोवडे सिद्ध थई शकता नथी एटले के तेवी काई एण युक्ति नथी के जेनाथी नित्यानित्यने विषे विरोध साधी शकाय। कारण के (कृष्ण अने श्वेत विगेरे) विरुद्ध वर्णनो योग पटादिक शबल (जूदा जूदा विचित्र वर्णवाळी) वस्तुने विषे प्रत्यक्ष जावामां आवे हो. ७.

विज्ञानस्यैकमाकारं, नानाकारकरम्बितम् । इच्छंस्तथागतः प्राज्ञो, नानेकान्तं प्रतिक्षिपेत् ॥ ८॥

विज्ञान (ज्ञान) नुं एक ज स्वरूप छे अने ते घटा-दिकना विचित्र आकारे करीने सिहत छे एम इच्छता प्राज्ञ बौद्ध अनेकांत (स्याद्वाद्) ने उत्थापी शकतो नथी. एटले के एक स्वरूपवाळा ज्ञानने विचित्र आकारवाळुं मानवाथी अनेकांत मत मान्यो ज कहेवाय छतां तेने नहीं स्वीकारतो बौद्ध खरेखर प्राज्ञ (प्र×अज्ञ-मोटो अज्ञानी) छे. 5. चित्रमेकमनेकं च, रूपं प्रामाणिकं वदन् । योगो वैशेषिको वापि, नाडनेकान्तं प्रतिक्षिपेत् ॥९॥

एक ज रूप (घटादिक) अनेक रूप (आकार) वाळुं छे, ते प्रमाणसिद्ध छे. एम बोळतां नैयायिक अने बरोषिक | मतवाळा पण अनेकांतमतने उत्थापी शकता नथी. ९.

इच्छन्प्रधानं सत्त्वाद्यै–र्विरुद्धैर्गुम्फितं गुणैः । साङ्खचः सङ्ख्यावतां मुख्यो, नाऽनेकान्तं प्रतिक्षिपेत् १०

विद्वानोमां मुख्य एवो सांख्य मत सत्वादिक विरुद्ध गुणे करीने सिहत प्रधानने (प्रकृतिने) इच्छे छे, पटले के सत्त्वगुण, रजोगुण अने तमोगुण पित्रगुणात्मक प्रकृति छे एम इच्छे छे. ते त्रणे गुणो परस्पर विरुद्ध छे, तेने एक ज वस्तु (प्रकृति) मां माने छे; तेथी ते अनेकांत मतने उत्थापी शकतो नथी. १०.

विमतिः सम्मतिर्वापि, चार्वाकस्य न मृग्यते । परलोकात्ममोक्षेषु, यस्य मुद्यति शेमुषी ।। ११ ॥

हे प्रभु ! परलोक, जीव अने मोक्षमां पण जेनी

मित मुंझायेली छे ते चार्वाक (नास्तिक) नी अहीं विमित छे के संमिति छे ते कांइ विचारवानी जरुर नथी; केमके बाळ-गोपाळ पर्यंत सर्व कोइ परलाकादिकने माने छे. तेने ज जे मानता नथी एवा चार्वाकनी विमित के संमितिथी शुं फळ ? ११.

तेनोत्पादव्ययस्थेम-सम्भिन्नं गोरसादिवत् । त्वदुपज्ञं कृतिथयः, प्रपन्ना वस्तुतस्तु सत् ॥ १२॥

आथी करीने हे वीतराग ! कुराळ बुद्धिवाळा (ज्ञानी) पुरुषोए गोरसादिकनी जैम उत्पात, ब्यय अने धोव्यस्वरूपवाळी सत् वस्तु के जे आपे सौथी प्रथम प्ररूपी छे तेने ज अंगीकार करी छे. जेम गारस (दूध) दूधपणावडे नारा पामी दहींपणे उत्पन्न थयुं ते पण गोरस ज कहेवाय छे. एटले के दूधरूप द्रव्यना दहींरूप पर्याय थयो. ते ज रीते मृत्तिकादिक द्रव्यनो घटादिक पर्याय छे. ते ज रीते जोव द्रव्यनो मनुष्या-दिक पर्याय छे विगेरे. १२.

इत्यष्टमप्रकाशः

अथ नवम प्रकाराः ९.

यत्राल्पेनापि कालेन, त्वद्भक्तैः फलमाप्यते । कलिकालः स एकोऽस्तु, कृतं कृतयुगादिभिः ॥१॥

आ प्रमाणे एकांत मतनो निराश करीने आ किलकालनी उत्तमता देखाडवापूर्वक वीतराग प्रभुनुं धर्मचक्रवर्तीपणुं बतावे छे—

जे कलिकालमां थोडाकाळवडे पण आपना भक्तो आपनी भक्तिना फळने पामे छे ते कलिकाल ज एक हो. कत्युग वगेरे युगोथो सर्युं. तेतुं कांइ काम नथी. कह्युं छे के "कृतयुगमां हजार वर्ष सुधी करेली भक्तितुं जे फळ प्राप्त थाय हे ते फळ त्रेतायुगमां एक वर्षवडे, हा-परमां एक मासवडे अने कलियुगमां एक अह्वोरात्र-वडे प्राप्त थाय हे. " १.

सुषमातो दुःषमायां, ऋषा फलवती तव । मेरुतो मरुभूमौ हि, श्लाध्या कल्पतरोः स्थितिः ॥२॥

हे प्रभु ! सुषमा काळ करतां दु:पमा (कित) काळमां आपनी रूपा (होय तो ते) फळवाळी उत्तम फळने आपनारी छे, केमके मेरुपर्वत करतां मार-चाडनो भूमिमां कल्पवृक्षनी स्थिति चखाणवा लायक छे. २.

श्राद्धः श्रोता सुधीर्वक्ता, युज्येयातां यदीश! तत्। त्वच्छासनस्य साम्राज्यमेकच्छत्रं कलाविष ॥३॥

हे प्रभु ! श्रद्धावान श्रोता अने सुधी (आपना आगमना रहस्यने जाणनार) वक्ता ए बेनो जो समा गम थाय तो आवा कलियुगमां पण आपना शासननुं एकक्षत्रवाळुं ज साम्राज्य छे. अहीं कुमारपाल राजा श्रोता अने पोते (श्री हेमचन्द्राचार्थ) वक्ता ए बेना याग थवाथी शासननुं साम्राज्य थयुं तथी आ अनुम्मविसद्ध कविनुं वचन छे. ३.

युगान्तरेऽपि चेन्नाथ !, भवन्त्युच्छृङ्खलाः खलाः । वृथेव तर्हि कुप्यामः, कलये वामकेलये ॥४॥

हे नाथ ! जो कृतयुग विगेरे बीजा युगमां पण मंखलिपुत्र जेवा उद्धत खळपुरुषो होय छे, ता पद्धी अयोग्य चरित्रवाळा किळयुगनी उपर अमे फागट ज कोप करीए छोए. ४.

कल्याणसिद्धचै साधीयान्, कलिरेव कषोपलः । विनाम्नि गन्धमहिमा, काकतुण्डस्य नैधते ॥५॥ कत्याणनो सिद्धिने माटे कसोटीना पत्थर जेवो किछयुग ज वधारे सारा छे, केमके अग्नि विना अगरुना गन्धनो महिमा वृद्धि पामतो नथी. ५.

निशि दीपोऽम्बुधौ द्वीपं,मरौ शाखी हिमे शीखी । कलौ दुरापः प्राप्तोऽयं, त्वत्पादाब्जरजःकणः ॥६॥

हे प्रभु ! कलियुगमां दुखे करोने पामी शकाय पत्नी आ आपना चरणकमळना रजनी कणीओ रात्रीए दीवानी जेम, समुद्रमां द्वीपनी जेम, मारवा-डमां वृक्षनी जेम, अने शियाळामां अग्निनी जेम अमने प्राप्त थइ छे. ई.

युगान्तरेषु भ्रान्तोऽस्मि, त्वद्द्यनिवनाकृतः । नमोऽस्तु कलये यत्र, त्वद्द्यनमजायत ॥७॥

हे प्रभु ! बीजा युगोमां हुं आपना दर्शन वि-नानो ज आ संसारक्षपी अरण्यमां भटक्यो छुं तथी आ किलयुगने ज नमस्कार हो के जेमां आपनुं दर्शन थयुं. ७. बहुदोषो दोषहीनात्त्वत्तः कलिरशोभत । विषयुक्तो विषहरात्फणीन्द्र इव रत्नतः ॥८॥

हे प्रभु! जेम विषने हरण करनारा मणिवडे विष युक्त सर्प शोभे छे तेम अढार दोष रहित आप-चडे घणा दोषवाळो कलियुग शोभे छे. ८.

इति नवमप्रकाशः

अथ दशम प्रकाश १०.

मत्त्रसत्तेस्त्वत्त्रसादस्त्वत्त्रसादादियं पुनः । इत्यन्योन्याश्रयं भिन्धि, प्रसीद भगवन् ! मयि ॥१॥

हे भगवन् ! मारा मननी प्रसन्नताथी एटले (निर्मळताने अनुसारे) आपनी प्रसन्नता (कृपा) मारा पर थाय छे अने आपना प्रसादथी (कृपाथी) आ मारा मननो प्रसन्नता (निर्मळता) थाय छे. आ प्रमाणे उत्पन्न थयेला अन्योन्याश्रय दोषने आप भेदी नाखो अने मारा उपर आप प्रसन्न थाओं (कृपा करो) एटले के मारी तुच्छ प्रसन्नतानो अनादर करी प्रथमथी ज आप मारा पर कृपा करो के जेथी आपनी प्रसन्नताथी हुं अवश्य प्रसन्न थहरा. १.

निरीक्षितुं रूपलक्ष्मीं, सहस्राक्षोऽपि न क्षमः । स्वामिन् ! सहस्रजिह्वोऽपि, शक्तो वक्तुं न ते गुणान् ॥२॥

हे स्वामिन्! आपनी रूपलक्ष्मी जोवाने हजार नेत्रवाळो इंद्र पण समर्थ नथी अने आपना गुण गोवाने हजार जिह्वावाळो रोषनाग पण समर्थ नथी. २.

Jain Education International Private & Personal Use Onlyww.jainelibrary.org

संशयान् नाथ ! हरसेऽनुत्तरस्त्रिगामि । अतः परोऽि किं कोऽि , गुगः स्तुत्योऽस्ति वस्तुतः? ३॥

हे नाथ ! आप अहीं रह्या छतां ज अनुत्तर विमानमां रहेला देवोना पण संशयोने हरा छो, तो छुं आथी बीजो वस्तुत: (परमार्थथी) स्तुति करवा छायक कोइ पण गुण छे. ? नथी ज. ३.

इदं विरुद्धं श्रद्धत्तां, कथमश्रद्दधानकः । आनन्दसुखसक्तिश्च, विरक्तिश्च समं त्विय ॥४॥

हे प्रभु ! अनंत आनंद्रूप सुख्मां आसिक अने सर्व संगनी विरक्ति ए बन्ने एकी साथे आपनामां छे. आवी विरुद्ध बाबत श्रद्धा विनानो (आपना छोको-सर चरित्रने नहि जाणनार) पुरुष शी रीते श्रद्धा करे (माने)? ४.

नाथेयं घट्यमानापि, दुर्घटा घटतां कथम् ?। उपेक्षा सर्वसत्त्वेषु, परमा चोपकारिता ।। ५।।

हे नाथ ! आपनी सर्व प्राणीओने विषे उपेक्षा (मध्यस्थपणुं-राग द्वेष रहितपणुं) अने ज्ञानादिक मोक्षमार्ग देखाडवाए करीने महा-उपकारीपणुं आ बे बावत आपने विषे प्रत्यक्ष देखाती होवाथी-घट-मान छुतां अन्यत्र अघटमान होवाथी शो रीते घटी शके ? ५.

द्वयं विरुद्धं भगवंस्तव नान्यस्य कस्यचित् । निर्गन्थता परा या च, या चोचैश्वऋवर्तिता ॥६॥

हे भगवन् ! जे उत्कृष्ट निर्श्रेथपणुं (नि:स्पृह-पणुं) अने जे उत्कृष्ट चक्रवर्तोपणुं-आ वे विरुद्ध बाबतो के जे बीजा कोइ हरिहरादिकमां नथीं, ते आपनामां स्वभाविक ज रहेळी के, ई.

नारका अपि मोदन्ते, यस्य कल्याणपर्वसु । पवित्रं तस्य चारित्रं, को वा वर्णयितुं क्षमः ? ॥७॥

जेमनी पांचे कल्याणक तिथिओमां नारकीओ पण एक मुहूर्त्त मात्र आनंद पामे छे तेमनुं (आपनुं) पवित्र चारित्र वर्णन करवा कोण समर्थ छे. ? ७.

शमोऽद्भुतोऽद्भुतं रूपं, सर्वात्मसु कृपाद्भुता । सर्वाद्भुतनिधीशाय, तुभ्यं भगवते नमः ॥८॥

हे बीतराग ! आपने विषे अद्भुत समता, अद्भुत रूप अने सर्व प्राणीओ उपर अद्भुत द्या छे; तेथी सर्व अद्भुतना महानिधानरूप आप भगवानने नमस्कार हो !८.

इति दशमप्रकाशः

अथ एकाद्दा प्रकाशः ११.

अचित्य महात्म्यनुं वर्णन-

निम्नन्परीषहचम् मुप्तसर्गान् प्रतिक्षिपन् । प्राप्तोऽसि श्रमसौहित्यं, महतां कापि वैदुषी ॥१॥

हे बीतराग ! आप परीसहोनी सेनाने हणता अने उपसर्गोनो तिरस्कार करता समतारूप अमृतनी तृतिने पाम्या छो, तेथी माटा पुरुषोनी चतुराइ कोइ अद्भुत ज होय छे. १.

अरक्तो भ्रक्तवान्मुक्तिमद्विष्टो हतवान्द्रिषः । अहो! महात्मनां कोऽपि, महिमा लोकदुर्लभः ॥२॥

हे वीतराग ! आपे राग रहित इतां मुक्ति-स्त्रीने भोगवी छे अने द्वेष रहित छतां कपायादिक शत्रुओने हण्या छे. अहो ! छोकमां दुर्छभ एवो महात्माओनो महिमा कोई अद्भुत ज छे. २.

सर्वथा निर्जिगीषेण, भीतभीतेन चागसः । त्वया जगत्त्रयं जिग्ये, महतां कापि चातुरी ॥३॥ हे प्रभु ! सर्व प्रकारे शत्रुने जीतवानी नहीं रुच्छावाळा अने पापथी अत्यंत भय पामेळा छतां पण आपे त्रण जगत्ने जीती लीधा छे, तो महापुरु-पोनी चतुराइ कोइ अद्भुत ज हे. ३.

दत्तं न किञ्चित्कस्मैचिन्नात्तं किञ्चित्कुतश्चन । प्रभुत्वं ते तथाप्येतत्कला कापि विपश्चिताम् ॥४॥

हे प्रभु! आपे कोईने कांइ गाम विगेरे आण्युं नथी तेम ज कोइनी पासेथी कांई दंडादिक छीधुं । नथी, तो पण आपनुं आ (समवसरणादिक लक्ष्मी- ह्रप) ऐश्वर्य छे तो विद्वानोनी कळा कोइक अपूर्व हे ४.

यदेहस्यापि दानेन, सुकृतं नार्जितं परैः । उदासीनस्य तन्नाथ !, पादपीठे तवाछठत् ।।५।।

हे नाथ ! बीजा बौद्धादिके पोताना देहने आप-षावडे पण जे सुकृत उपार्जन कर्युं नथी ते (उप-कारीपणारूप सुकृत) उदासीन भावे रहेला -आपना पादपीठमां आलोटयुं हुे. ५.

रागादिषु नृशंसेन, सर्वात्मसु कृपालुना । भीमकान्तगुणेनोचैः, साम्राज्यं साधितं त्वया ॥६॥ हे प्रभु ! रागादिकने विषे दया रहित अने सर्व प्राणीआ उपर दयावाळा आपे प्रतापादिक भयं-कर अने समतादिक मनोहर गुणे करीने मोटुं साम्राज्य साध्युं हो. ६.

सर्वे सर्वात्मनाऽन्येषु, दोषास्त्वयि पुनर्गुणाः । स्तुतिस्तवेयं चेन्मिथ्या, तत्त्रमाणं सभासदः॥ ७ ॥

हे नाथ ! हरिहरादिक अन्य देवोमां सर्व दोषो सर्व प्रकारे रहेळा छे अने आपने विषे सर्वथा सर्व गुणो रहेळा छे आ आपनी स्तुति जो मिथ्या होय तो सभासदा प्रमाणभूत छे. तेओ जे कहे ते साचुं. ७.

महीयसामिप महान्, महनीयो महात्मनाम् । अहो ! मे स्तुवतः स्वामी, स्तुतेर्गोचरमागतः ॥८॥

मोटामां मोटा अने महात्माओना पण पूज्य पवा स्वामी आजे स्तुति करता पवा मारी स्तुतिना विषयने पाम्या छे. ९.

इति एकादश प्रकाशः ११.

अथ द्वादश प्रकाश. १२.

प्रभुने आटली बधी संपत्तिनी प्राप्ति थई तेनो डपायरूप वैराग्य बतावे छे—

पट्विभ्यासादरैः पूर्वं, तथा वैराग्यमाहरः । यथेह जन्मन्याजन्म, तत्सात्मीभावमागमत् ।।१॥

हे वीतराग ! आपे पूर्व भवमां सुंदर अभ्यासना आदरे करीने एहवो वैराग्य प्राप्त कर्यो हतो के जेथी आ (तीर्थंकरना) भवमां ते वैराग्य जन्मथी ज सहज भावने पामेल छे अर्थात् जन्मथी ज आपना आत्मा वैराग्यथीं रंगायेलो छे.

दुःखहेतुषु वैराग्यं, न तथा नाथ ! निस्तुषम् । मोक्षोपायप्रवीणस्य, यथा ते सुखहेतुषु ॥२॥

हे नाथ ! मोक्षना उपाय (ज्ञानादिक) मां प्रवीण पवा आपने सुखना हेतुने विषे जेवो निर्मळ प्रेराग्य होय छे. तेवो दु:खना हेतुने विषे नथी होतो. एटले जे दु:खहेतुक वैराग्य होय ते क्षणिक होय छे अने सुखहेतुक वैराग्य होय ते निश्चल होवाथी मोक्षनुं साधन अवस्य थाय छे. २.

विवेकशाणैर्वैराग्यशस्त्रं शातं त्वया तथा । यथा मोक्षेऽपि तत्साक्षादकुण्ठितपराक्रमम् ।।३॥

हे प्रभु ! विवेकरूपी शाण (शराण) उपर वैराग्यरूपी शस्त्रने आपे तेवी रीते घसीने तीक्ष्ण कर्युं छे के जेथी माक्षने विषे पण ते: (वैराग्यरूपी शस्त्र)तुं पराक्रम जरा पण हणायुं नथी.

यदा मरुनरेन्द्रश्रीस्त्वया नाथोपभ्रुज्यते । यत्र तत्र रतिर्नाम विरक्तत्वं तदापि ते ॥४॥

हे नाथ ! ज्यारे आप पूर्वभवमां देवनी ऋदिने अने ते पद्योग तीर्थकरना भवमां राज्यलक्ष्मीने भोगवो हो त्यारे पण तमारो वैराग्य ज हो; केमके ज्यां त्यां पण तमारे रित (समाधि) ज हो एउले के देव अने राज्यनी लक्ष्मी भोगवतां ह्यतां पण आप भोग्य फळ-वाळुं कर्म भोगव्या विना क्षय पामरो नहीं एम विचारीने अनासक्तपणे भोगवो हो तेथी ते कर्मनी निर्जरा ज थाय हो. ४

नित्यं विरक्तः कामेभ्यो, यदा योगं प्रपद्यसे । अलमेभिरिति प्राज्यं, तदा वैराग्यमस्ति ते ॥५॥ हे बोतराग ! सर्वदा एटले दीक्षा प्रहण कर्या पहेलां पण विषयोधी विरक्त थपला आप ज्यारे योग (ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप दोक्षा)ने अंगीकार करो छा त्यारे आ विषयोधी सर्धु एम विचारतां आपने मोटा वैराग्य ज छे. ५.

सुखे दुःखे भवे मोक्षे, यदौदासीन्यमीशिषे । तदा वैराग्यमेवेति, क्कन्न नासि विरागवान् ? ॥६॥

सुखमां, दु:खमां, संसारमां, मोक्षमां सर्वत्र आप ज्यारे उदासीनता (मध्यस्थता) करो छो त्यारे पण आपने वैराग्य ज छे, तेथी आप क्यां अने क्यारे वैराग्यवाळा नथी ? सर्वत्र वैराग्यवाळा ज छो. ६.

दुःखगर्भे मोहगर्भे, वैराग्ये निष्ठिताः परे । ज्ञानगर्भे तु वैराग्यं, त्वय्येकायनतां गतम् ।।७॥

बीजा (परतीर्थिको) दु:खगिभत अने मोहगिभत वैराग्यमां रहेला छे, परंतु ज्ञानगिभित वैराग्य तो आपने विषे पक्षीभावने (तन्मयपणाने) पाम्युं छे. (इष्ट्रना वियोगथी अने अनिष्ट्रना संयोगथी थयेलो वैराग्य दु:खगिभत कहेवाय छे. कुगान्त्र में कहेलां अध्या-रमना लेगने सांभळवाथी जे वैराग्य थाय ते मोह-

गर्भित अने यथास्थित संसारनुं स्वरूप जोइने जे वैराग्य थाय ते ज्ञान गर्भित वैराग्य कहेवायछे.) ७.

औदासीन्येऽपि सततं, विश्वविश्वोपकारिणे । नमो वैराग्यनिष्ठाय, तायिने परमात्मने ॥८॥

हे वीतराग ! उद्दोसीनता (मध्यस्थपणा) ने विषे पण निरंतर सर्व विश्वने उपकार करनार, वैराग्यमां तत्पर, सर्वना रक्षक अने परब्रह्मस्वरूप एवा आपने अमारा नमस्कार हो. ८.

इति द्वादश प्रकाशः १२.

अथ त्रयोदश प्रकादाः १३.

प्रभु सर्वत्र हेतु विना ज स्वेच्छाए प्रवर्ते छे, ते बतावे छे.

अनाहृतसहायस्त्वं, त्वमकारणवत्सलः । अनभ्यर्थितसाधुस्त्वं, त्वमसम्बन्धवान्धवः ॥१॥

हे वीतराग! मुक्तिपुरीना मार्गमां जनारा प्राणी-ओने आप बोल्डाच्या विना ज सहायकारक छो, आप कारण (स्वार्थ) विना ज हितकारक छो, आप प्रार्थना कर्या विना ज साधु पटले परनुं कार्य कर-नारा छो; तथा आप संबंध विना ज बांधव छो. १.

अनक्तस्निग्धमनसममृजोज्ज्वलवाक्पथम् । अधौतामलशीलं त्वां, शरण्यं शरणं श्रये ।।२।।

ममतारूपी स्नेह्वडे नहीं चोपडाया छतां स्निग्ध मनवाळा, मार्जन कर्या विना ज उज्वळ वाणीने बोलनारा, घोया विना ज निर्मळ शीलवाळा अने तेथी करीने ज शरण करवा लायक एवा आपनुं हुं शरण छउं छुं. २ अचण्डवीरत्रतिना, शमिना शमत्रत्तिना । त्वया काममकुट्यन्त, कुटिलाः कर्मकण्टकाः ॥३॥

क्रोध विना ज वोरव्रतवाळा (सुभटनी वृत्ति-वाळा), शमतावाळा अने शमतामां वर्तनारा आपे कुटिल कर्मकरी कांटाओना अत्यंत नाश कर्यो हे. ३.

अभवाय महेशायाऽगदाय नरकच्छिदे । अराजसाय ब्रह्मणे, कस्मैचिद्भवते नमः ॥४॥

भव (महादेव) रहित महेश्वरहए, गदा रहित नरकिन्छद (विष्णु) ह्रप अने रजागुण रहित ब्रह्मा- ह्रप एवा केाइ (न कही शकाय तेवा) आपने नमस्कार हो. (अहीं कहेळा छए शब्दो एरस्पर विरुद्ध छे एटले के जे भव (महादेव) न हाय ते महेश्वर एण न होय, जे गदा रहित होय ते विष्णु न होय अने जे रजोगुण रहित होय ते ब्रह्मा न होय केमके भव ज महेश्वर छे, विष्णु गदा सहित ज छे अने ब्रह्मा रजोगुण सहित ज छे. आ विरोधने दूर करवा माटे आवो अर्थ करवो-श्रो वीतराग प्रभु अभव एटले संसार रहित छे, महेग्र एटले तीर्थंकर संबंधी एरम ऐश्वर्य सहित छे, अगद एटले राग रहित छे, नरकिन्छद एटले धर्मतीर्थनो प्रवृत्ति कर-

वाथो भव्य प्राणीओनी नरकगितने छेदनार छे. अ-राजस पटले कमेरूपी रज रहित छे अने ब्रह्मा पटले परब्रह्म (मोक्ष) ने विषे लय पामेला होवाथी ब्रह्मारूप छे.) ४

अनुक्षितफलोदग्रादिनपातगरीयसः । असङ्कल्पितकल्पद्रोस्त्वत्तः फलमवाप्नुयाम् ॥५॥

(सर्व वृक्षो निरंतर जळिसंचन करवाथो ज अमुक समये ज मात्र फळने आपे छे, वळी पड-वाए करीने ज मोटा भारवाळा होय छे अने प्रार्थना करवाथी ज इन्छित वस्तुने आपनार होय छे, परंतु) आप तो सिंचन कर्या विना ज उभयळोकना सुख-रूपी फळोए करीने परिपूर्ण छो, पड्या विना ज एटले स्वस्वरूपमां रहेवाथो ज भौरवतावाळा छो अने प्रार्थना कर्या विना ज इन्छित वस्तुने आपनारा छो. तेथो आवा प्रकारना कल्पवृक्षरूप आपनाथी हुं फळने पामुं छुं. ५

असङ्गस्य जनेशस्य, निर्ममस्य कृपात्मनः । मध्यस्थस्य जगन्नातुरनङ्कस्तेऽस्मि किङ्करः ॥६॥

(आ श्रोकमां पण परस्पर विरुद्ध छ विशे-षणो आ रीते छे-जे संग रहित होय ते जनेश-छोकना स्वामो होइ शके नहीं, ममता रहित होय ते कोइना पर कृपा करे नहीं, अने मध्यस्थ-उदासीन होय ते बीजानं रक्षण करे नहीं, तो पण) आप तो सर्व संगनो त्याग करी तीर्थंकरपदना प्रभावथी इच्छा रहित छतां पण त्रण जगतना छोकोने सेव्य होवाधी जनेश हो, तथा वीतरागपणाथकी ज ममता रहित छतां पण दुष्कर्मथी पीडाता त्रण जगतना प्राणीओ उपर कृपाळु छो, तथा रागद्वेष रहितपणाने लीधे मध्यस्थ पटले उदासीन इतां पण पकांत हितकारक धर्मोपदेश देवाथी आभ्यंतर शत्रुथी त्रास पामेळा जगत्ना जोवोना रक्षक हो; आवा विशेषणवाला आपनो हं अंक (चिह्न) रहित किंकर छुं. जे किंकर होय ते खड़ादिक चिद्ववाळो होय छे, पण हं तो द्विपदादि परिग्रह रहित एवा आपनो कदाग्रह-रूपी कलंक रहित ज सेवक छुं. ६.

अगोपिते रत्ननिधाववृते कल्पपादपे । अचिन्त्ये चिन्तारत्ने च, त्वय्यात्माऽयं मयार्पितः ॥॥

(आ श्लोकमां पण छ शब्दो परस्पर विरुद्ध आ रीते छे. रत्ननो निधि गोपव्या विना रही शके नहीं अने नहीं, करुपबृक्ष वाड विना रही शके नहीं अने चितामणि रत्न प्रार्थना कर्या विना कांद्र पण आपे नहीं तो पण) आप तो नहीं गुप्त करेला-प्रगट रत्नना निधि समान, कर्मकृषी वाड विनाना करूप-

चृक्ष समान अने अचित्य चितामणि समान आपने विषे में मारो आ आत्मा अर्पण कर्यों हे. ७.

(पहेलेथी आ सातमा श्लोक सुधीमां अनुक्रमे पहेलेथी साते विभक्तिओ लीधेली छे.)

फलानुध्यानवन्ध्योऽहं, फलमात्रतनुर्भवान् । प्रसीद यत्कृत्यविधौ, किङ्कर्तव्यजडे मयि ॥८॥

आप सिद्धत्वरूप फळ मात्र शरीरवाळा छो अने हुं फळरूप आपना ध्यान रहित छुं, तेथी मारे शुं करवुं ? ए बाबतमां जड-मृढ थयेला मारा उपर मारे जे करवा लायक होय ते विधि देखाडवामां कृपा करो. ८.

इति त्रयोदश प्रकाशः १३.

अथ चतुर्दश प्रकाश. १४.

हवे योगनी शुद्धि बतावे छे.—

मनोवचःकायचेष्टाः, कष्टाः संहत्य सर्वथा । श्रुथत्वेनेव भवता, मनःशल्यं वियोजितम् ॥१॥

हे भगवन् ! कष्टकारक एटले पापवाळी मन, वचन अने कायानी चेष्टाने सर्वथा तजीने शिथिल-पणावडे ज आपे मनना शल्यने दूर कर्युं छे. (शरीरमां कोइ ठेकाणे शल्य (कांटो) लाग्यो होय तो वाह्य चेष्टानो निरोध करी शरीरने शिथिल करवाथी (ढीलुं मूकवाथी) तरत ज ते शल्य चीपीया विगेरेथी नीकळी शके छे. ते ज रीते सर्व चेष्टाआने हंधी मनने शिथिल (मोकलुं) मूकवाथी ते मन पोतानी मेळे ज शांत थइ जाय छे; केमके विपरीत शिक्षावाळा अथ्वनी जेम मनमुं नियंत्रण करवाथी ते उलाउं वधारे प्रसरे छे—चपळ थाय छे अने शिथिल मूकवाथी पोतानी मेळे ज स्थिर थाय छे.) १.

संयतानि न चाक्षाणि, नैवोच्छृङ्खलितानि च । इति सम्यक्प्रतिपदा, त्वयेन्द्रियजयः कृतः ॥२॥ हे वीतराग ! आपे इंद्रियोने बळात्कारे नियंत्रित करी नथी, तेम ज छोलुपताथी छूटी पण मूकी नथी. आ रीते सम्यक् प्रकारे वस्तुतत्त्वने अंगीकार करनारा आपे इंद्रियोनो जय कर्यो छे. (इन्द्रियोने बळात्कारे बांधवाथी ते कौतुकवाळी. थइने वंधनमां रहेतो नथी अने जो केटलोक काळ तेने छूटो मूक-वामां आवे तो विषयना स्वरूपने जाणी, अनुभवी, कौतुक रहित थइ पोतानी जाते ज निवृत्ति पामे छे अने फरीथी ते कदापि विकार पामती नथो. आ हकीकत ज्ञानी महात्मा माटे छे, अन्य जनोए तो इन्द्रियोनो जय करवा सर्वथा शक्ति फोरववी जोइए.) २.

योगस्याऽष्टाङ्गता नृनं, प्रपञ्चः कथमन्यथा ? । आबालभावतोऽप्येष, तव सात्म्यमुपेयिवान् ॥३॥

हे प्रभु! अन्य शास्त्रोमां यम १, नियम २, आसन ३, प्राणायाम ४, प्रत्याहार ५, घारणा ६, ध्यान ७ अने समाधि ८ आ आठ अंग योगना (समाधिना) कह्या छे ते मात्र प्रपंच (आइंबर-विस्तार) हाय तेम भासे छे, कारण के तेम न हाय ता आपने बाल्यावस्थाथी ज आ योग सहज-पणाने शो रीते पामे? (आसनादिक बाह्य विस्तार विना ज परम ज्ञान-वैराग्यादिकरूप योग आपने स्वामाविक ज प्राप्त थयो छे.) ३.

विषयेषु विरागस्ते, चिरं सहचरेष्वि । योगे सात्म्यमदृष्टेऽपि, स्वामिन्निद्मलीकिकम् ॥४॥

हे स्वामी ! घणा काळना परिचयवाला विषयो उपर पण आपना वैराग्य छे अने जन्म पर्यंत नही जोयेला पवा पण योगने विषे पकपणुं–तन्मयपणुं छे. आ आपनुं चरित्र अलौकिक छे. ४.

तथा परे न रज्यन्त, उपकारपरे परे । यथाऽपकारिणी भवानहो ! सर्वमलौकिकम् ॥५॥

हे बीतराग ! अपकार करनारा कमठ, गौशालक विगेरे उपर पण आप जे प्रमाणे रागी (खुशी)
थाओ छो ते प्रमाणे अन्य देवो उपकार करनारा
सेवक उपर पण रागी थता नथी. अहा ! आपनुं सर्व
चरित्र अछौकिक छे. (कमेक्षय करवामां प्रवर्तेछा
मने कमठ ठीक सहायभूत थयो छे एम धारी आप
तेना पर खुशी थाओ छो.) ५.

हिंसका अप्युपकृता, आश्रिता अप्युपेक्षिताः । इदं चित्रं चरित्रं ते, के वा पर्यनुयुज्जताम् ? ॥६॥

हे प्रभु ! चंडकौशिक विगेरे हिंसकोने पण सद्गति पमाडवाबडे आपे उपकार कर्यों छे, अने सर्वानुभूति तथा सुनक्षत्र विगेरे आश्रितोनी पण आपे उपेक्षा करो छे पटले के आ भव संबंधी आ-पत्तिथो तेमनुं रक्षण कर्युं नथो. आवा आश्र्यं-कारक आपना चरित्रने कोण पूछ्वाने पण उत्साह धारण करे ? आप आवुं चरित्र केम करो छो ? पम कोइ पूछो पण शके तेम नथी. इ.

तथा समाधी परमे, त्वयात्मा विनिवेशितः। सुखी दुःख्यस्मि नास्मीति, यथा न प्रतिपन्नवान्॥७॥

हे भगवन् ! आपे आपना आत्माने एवी रीते उत्तम समाधिमां स्थापन कर्यो छे के जेथी हुं सुखी हुं ? के दु:खी हुं ? के नथी ? एम जरा पण आपे स्वीकार्युं नथी. अर्थात् आप संकल्प रहित हो. ७.

ध्याता ध्येयं तथा ध्यानं, त्रयमेकात्मतां गतम् । इति ते योगमाहात्म्यं, कथं श्रद्धीयतां परैः ?।।८।।

हे प्रभु ! ध्याता, ध्येय अने ध्यान आ त्रणे आपने विषे एकपणाने (अभेदने) पामेळा छे. आवा प्रकारना आपना योगमहात्म्यने अन्य जनो (सूक्ष्ममार्गने नहीं जाणनारा लोको) शी रीते श्रद्धा करे-माने ? ८.

इति चतुर्दशप्रकाशः

अथ पंचदश प्रकाशः १५.

हवे भक्तिपूर्वक स्तुति करे छे.—

जगज्जेत्रा गुणास्त्रातरन्ये तावत्तवासताम् । उदात्तशान्तया जिग्ये, मुद्रयैव जगत्त्रयी ॥१॥

हे रक्षक ! प्रथम तो जगतने जीतनारा बीजा आपना गुणो दूर रहो, परंतु उदात्त (पराभव न पमाडी शकाय पत्नी) अने शांत (सौम्य) प्वी आपनी मुद्राए ज त्रण जगतने जीती छीधा छे. १.

मेरुस्तृणीकृतो मोहात् , पयोधिर्गोष्पदीकृतः । गरिष्ठेभ्यो गरिष्ठो थैः, पाप्मभिस्त्वमपोदितः ॥२॥

हे नाथ ! जे पापीओए मोटाथी पण माटा एटले इंद्रादिकथी पण मोटा एवा आपनो अनादर कर्यों छे, तेओए अज्ञानथी मेरुपर्वतने तृण जेवडो गण्यों छे अने समुद्रने गोष्पद (गायनीखरी) जेवडो गण्या हे. २. च्युतश्चिन्तामणिः पाणेस्तेषां लब्धा सुधा सुधा । यैस्ते शासनसर्वस्वमज्ञानैर्नात्मसात्कृतम् ॥ ३॥

जे अज्ञानीओए आपनुं शासनरूपी सर्वस्व (धन) पोताने आधीन कर्युं नथी तेओ (निर्भागीओ) ना हाथथी चिंतामणि रत्न पडी गयुं छे अने प्राप्तः थयेळुं अमृत निष्फळ थयुं छे.३.

यस्त्वय्यपि दघो दृष्टिमुल्मुकाकारघारिणीम् । तमाञ्जञ्जक्षणिः साक्षादालप्यालिमदं हि वा ॥४॥

हे प्रभु ! जे (निर्भागी) मनुष्य निष्कारण-वत्सल आपना उपर पण बळता उंबाडीयानी जेबी इर्ष्यांवाळी दृष्टिने धारण करे छे, तेने साक्षात् आग्नि (बाळी नांखों) अथवा तो ओवुं वचन बोलवाथी सर्युं (न बोलवुं ज सारुं छें) ४.

त्वच्छासनस्य साम्यं ये, मन्यन्ते शासनान्तरैः । विषेण तुल्यं पीयूषं, तेषां हन्त ! हतात्मनाम् ॥५॥

हे प्रभु ! खेदनी वात छे के जे लोका आपना शासनने बीजा दर्शनोनी साथे तुल्य माने छे, ते अज्ञान्यी हणायेला जनोने अमृत पण विष तुल्य छे. (तेओ अमृतने विष समान गणे छे एम जाणवुं.) ५

अनेडमुका भ्र्यासुस्ते येषां त्विय मत्सरः । ग्रुभोदर्काय वैकल्यमपि पापेषु कर्मसु ॥६॥

हे प्रभु ! जेओने आपना उपर इर्घा छे, ते लोको बहेरा ने मुंगा ज हो (कान अने वचन रिहत ज हो), केमके परनिदादिक पापव्यापारमां इंद्रियोनुं विकल्लपणुं (रिहतपणुं) पण शुभ परि-णामने माटे ज छे अर्थात् विकल्लपणाथकी आपनी निदादिक न करी शकवाथी तेओ दुर्गतिमां जहो नहीं, ए ज तेओने मोटे मोटो लाभ छे. ६.

तेभ्यो नमोऽञ्जलिरयं, तेषां तान् समुपास्महे । त्वच्छासनामृतरसैर्थेरात्माऽसिच्यतान्त्रहम् ॥७॥

जेओए आपना शासनरूपी अमृतरसवडे निरंतर पाताना आत्माने सिंच्यो छे, तेमने अमारो नमस्कार थाओ, तेमने अमे बे हाथ जोडीए छीए अने तेमने अमे सेवीए छीए. ७.

भुवे तस्यै नमो यस्यां, तत्र पादनखांशवः । चिरं चूडामणीयन्ते, ब्रमहे किमतः परम् ? ॥८॥

हे प्रभु ! जे भूमि पर आपना पगना नखना

किरणो चिरकाल सुधी चूडामिणनी जेवा शोभे छे, ते भूमिने नमस्कार हो. आधी वधारे अमे द्युं कहीए ? आधी वधारे भक्तिनुं वचन अमारी पासे छे नहीं. ८.

जन्मवानस्मि धन्योऽस्मि, कृतकृत्योऽस्मि यन्मुहुः । जातोऽस्मि त्वद्गुणग्रामरामणीयकलम्पटः ॥९॥

हे वीतराग ! आपना गुणसमृहरूपी रमणीक-तामां हुं वारंवार छंपट (मग्न) थयो छुं, तेथी मारो जन्म सफळ छे, मने धन्य छे, अने हुं कृतकृत्य (कृतार्थ) थयो छुं. ९.

इति पंचद्शप्रकाशः

अथ षोडदा: प्रकाशः १६

हवे प्रभु पासे स्तुतिकार पोतानी फरीयाद करे हे.

त्त्वन्मतामृतपानोत्था, इतः शमरसोर्मयः । पराणयन्ति मां नाथ !, परमानन्दसम्पदम् ॥१॥

हे नाथ! एक बाज़ुए आपना मतरूपी (आगमरूपी) अमृतना पानथी उत्पन्न थयेळा शमता रसना तरंगो मने परमानंदनी ळक्ष्मी प्राप्त करावे छे. १.

इतश्रानादिसंस्कारमुर्च्छितो मुर्च्छयत्यलम् । रागोरगविषावेगो, हताज्ञः करवाणि किम् १ ॥२॥

तथा बीजो बाजुए अनादि काळना भव-भ्रमणना संस्कारथी उत्पन्न थयेळो रागरूपो सर्पना विषनो वेग मने अति मूर्का पमाडे छे (सत्यज्ञान रिहत करी दे छे.) ता हगायेळी आशावाळो हुं इंग् कर्ष ? २

रागाहिगरलाघातोऽकार्षं यत्कर्मवैशसम् । तद्वक्तुमप्यशक्तोऽस्मि, धिग्मे प्रच्छन्नप्रापताम् !॥३॥

हे प्रभु! रागरूपो सर्पना विषयी व्याप्त थएला में जे अयोग्य कृत्य कर्यु छे ते आपनो पासे कहेवाने पण हुं अशक्त छुं. तेथो मारा गुत पाप करवापणाने धिक्कार छे. ३. क्षणं सक्तः क्षणं मुक्तः, क्षणं क्रुद्धः क्षणं क्षमी । मोहाद्यैः क्रीडयैवाऽहं, कारितः कपिचापलम् ॥४॥

हे प्रभु! हुं कोइवार संसारना सुखमां आशक थयो छुं तो कोईवार तेनाथो मुक्त (निर्लोभ) थयो छुं. काईवार क्रांध पाम्यो छुं, तो कोईवार क्षमावाळो थया छुं. आवी रीते, मोहादिके मने वांदरा जेवी चपळता करावी छे-चांदरानो जेम नचाव्यो छे. ४.

्रप्राप्यापि तव सम्बोधि, मनोवाकायकर्मजैः । ं दुश्रेष्टितैर्मया नाथ ! , शिरसि ज्वालितोऽनलः ॥५॥

हे नाथ ! आपनो धर्म पाम्या छतां पण मन वचन अने कायाना कर्मथी उत्पन्न थयेळी दुष्ट चेष्ठा -ओ वडे में मारा मस्तकपर अग्नि सळगाव्यो छे पेटले के दुर्गतितुं दु:ख उपार्जन कर्युं छे. ५.

त्वय्यपि त्रातरि त्रातर्थनमोहादिमलिम्छ्चैः । रत्नत्रयं मे द्रियते, हताशो हा! हतोऽस्मि तत्॥६॥

हे रह्नक ! आप रक्षण करनार छतां पण मोहा-दिक राघुओ मारां ज्ञान, दर्शन अने चरित्रक्ष त्रण रत्नो हरण करे छे, तेथी हणायेखी आसावाला हुं हणायो छुं. ६. भ्रान्तस्तीर्थानि दृष्टस्त्वं, मयैकस्तेषु तारकः । तत्त्वाङ्घौ विलग्नोऽस्मि, नाथ! तारय तारय ॥७॥

हे! नाथ हुं घणां तीर्थोमां भम्यो हुं, ते सर्वमां में आपनेज एक तारक जोया. तेथी हुं आपना चर-णमां लोगेलो हुं. माटे मने तारो तारो. ७.

मवत्त्रसादेनैवाहमियर्ती प्रापितो भ्रुवम् । औदासीन्येन नेदानीं, तव युक्तमुपेक्षितुम् ॥८॥

हे प्रभु ! आपनी कृपाथीज हुं आटली भूमि-काने (आपनो सेवानी योग्यताने) पाम्यो छुं. तो हुवे आपने उदासीनपणाए करीने मारी उपेक्षा करवी योग्य नथी. ८.

ज्ञाता तात! त्वमेवैकस्त्वत्तो नान्यः कृपापरः । नान्यो मत्तः कृपापात्रमेधि यत्कृत्यकर्मठः ॥९॥

हे पिता! आपज एक ज्ञाता छो, आपनाथी बीजो कोइ ऋपाळु नथी अने मारा विना बीजो कोई ऋपानुं पात्र (स्थान) पण नथी. तेथी आपज करवा लायक कार्यमां तत्पर थाओ (जे करवानुं होय ते करो). ९.

इति पोडशः प्रकाशः १६.

अथ सप्तद्याः प्रकाशः १७.

हवे भगवानने ज शरणरूपे ग्रहण करे छे.—

स्वकृतं दुष्कृतं गईन्, सुकृतं चाऽनुमोदयन् । नाथ ! त्वचरणौ यामि, शरणं शरणोज्झितः ॥१॥

हे नाथ ! पोते (में) करेला दुष्कर्मनी गर्हा (निंदा) करतो अने सुक्ततनी अनुमोदना करतो शरण रहित हुं आपना चरणने शरण करुं छुं. १

मनोवाकायजे पापे, कृतानुमतिकारितैः। मिथ्या मे दुष्कृतं भ्यादपुनःक्रिययान्वितम् ॥२॥

करबुं, करावबुं अने अनुमोदबुं ए त्रणवडे मन, बचन अने कायाथो उत्पन्न थयेळा पापने विषे जे मने दुष्कृत लाग्युं होय ते फरोथी नहीं करवा पूर्वक मार्ह दुष्कृत मिथ्या थाओं. २.

यत्कृतं सुकृतं किचिद्, रत्नत्रितयगोचरम् । तत्सर्वमनुमन्येऽहं, मार्गमात्रानुसार्यपि ॥३॥ हे प्रभु ! मात्र आपना मार्गने जे अनुसरनारं ज होय पर्वु पण जे कांद्र ज्ञान, दर्शन अने चोरित्र-रूप रत्नत्रयना विषयवाळुं मार्व सुकृत होय ते सर्वनी हुं अनुमोदना करं छुं. ३.

सर्वेषामहेदादीनां, यो योऽहेत्त्वादिको गुणः । अनुमोदयामि तं तं, सर्व तेषां महात्मनाम् ॥४॥

सर्वे तीर्थंकरादिकना (अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय अने साधुना) अरिहंतपणुं विगेरे जे जे गुण होय, ते सर्वे महात्माओना ते ते सर्व गुणनी हुं अनुमोदना कर्ष कुं. ४.

त्वां त्वत्फलभूतान् सिद्धांस्त्वच्छासनरतान् मुनीन् । त्वच्छासनं च शरणं, प्रतिपन्नोऽस्मि भावतः ॥५॥

हे बीतराग ! हुं आपनुं, आपना फलभूत एटले आपनी बतावेली किया करवाना फलक्प सिद्धानुं, आपना शासनमां रक्त थयेला मुनिओनुं अने आपना शासननुं भावथी (हृदयनो शुद्धिथी) शरणपाम्यो हुं. '४.

क्षमयामि सर्वान् सन्त्वान्, सर्वे क्षाम्यन्तु ते मिय । मैत्र्यस्तु तेषु सर्वेषु, त्वदेकशरणस्य मे ॥६॥ हे बीतराग ! हुं सर्व (वाराशी लाख जोबा-योनिमां रहेलो) जीवोने खमावुं हुं, अने ते सर्व जीवो मारे विषे क्षमा करो. आपना ज एक शरणमां रहेला मारे ते सर्व जीवोने विषे मैत्री हो. ६.

एकोऽहं नास्ति मे कश्चित्र चाहमपि कस्यचित् । त्वदङ्घिशरणस्थस्य, मम दैन्यं न किश्चन ।।७।।

हे वीतराग ! हुं एकलो ज कुं (पिता, पुत्र, शिष्यादिक उपर माह रहित होवाथी एकलो कुं). मार्ट कोइ नथो, हुं पण कोइनो नथी. आपना चर-णना शरणमां रहेलो मारे कांद्र पण दीनता नथी. ७

यावन्नामोमि पदवीं, परां त्वदनुभावजाम् । ताव मयि शरण्यत्वं, मा मुश्रः शरणं श्रिते ।।८॥

हे प्रभु ! आपना प्रसादधी उत्पन्न थयेली उत्कृष्ट पदवी (मुक्ति) ने हुं ज्यां सुधी न पामुं, त्यां सुधी (आपना) शरणने पामेला मारा उपर शरण्यपणाने (शरणे आवेलानी उपरना वात्सल्यने) सुकशो नहीं. ८

इति सप्तद्शप्रकाशः

अथ अष्टादशः प्रकाशः १८.

हवे कटोर वचनवडे प्रभुनी स्तुति करे छे.—

न परं नाम मृद्वेव, कठोरमपि किञ्चन । विशेषज्ञाय विज्ञप्यं, स्वामिने स्वान्तशुद्धये ॥१३

केवल कोमळ वचनथी ज नहीं परन्तु विशेष जाणनारा स्वामीने पोताना मननी शुद्धिने माटे कांइक कठोर वचनथी पण विनंति कराय छे. १.

न पक्षिपशुर्सिहादिवाहनासीनविग्रहः। न नेत्रगात्रवक्त्रादिविकारविकृताकृतिः ॥२॥

हे प्रभु ! आपे हंस, गरुड विगेरे पक्षी, बकरो, बळद विगेरे पश्चओ अने सिंह विगेरे वाहनो उपर शरीरने आरूढ कर्युं नथी; तेम ज नेत्र, अवयव अने मुख विगेरेना विकारवडे आपनी आर्कृत विकारवाळी नथी. २.

न शूलचापचक्रादिशस्त्राङ्गकरपहनः । नाङ्गनाकमनीयाङ्गपरिष्वङ्गपरायणः ॥३॥ आपना हस्तपल्लवनी मध्ये त्रिश्चळ, धनुष्य अने चकादिक शस्त्रो नथी, आप स्त्रीना मनोहर अंगनुं आर्लिगन करवामां तत्पर नथी. ३.

न गर्हणीयचरितप्रकम्पितमहाजनः । न प्रकोपप्रसादादिविडम्बितनरामरः

11811

निंदा करवा लायक चरित्रावडे आपे महा-पुरुषोने कंपाव्या नथी, तेमज कोप अने कृपादिक वडे मनुष्योने अने देवोने विडंबना पमाड्या नथी. ४.

न जगज्जननस्थेमविनाश्चिविहतादरः । न लास्यहास्यगीतादिविष्ठवोपप्लतस्थितिः ॥५॥

जगतनी उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय (नाज) करवामां आपे उद्यम कर्यों नथी तेमज नट-विटने उचित एवा नृत्य, हास्य अने गीतादिक विल्लासो-वडे आपे आपनी स्थितिने उपद्ववाळो करी नथी. क

तदेवं सर्वदेवेभ्यः, सर्वथा त्वं विलक्षणः । • देवत्वेन प्रतिष्ठाप्यः, कथं नाम परीक्षकैः ? ॥६॥

तेथी करीने आ उपर कह्या प्रमोगे सर्व देवो-यकी सर्वथा आप विलक्षण हो तेथी परीक्षक लोको आपने शो रीते देव तरीके स्थापन करी शके ? ६.

अनुश्रोतः सरत्पर्णतृणकाष्टादि युक्तिमत् ॥ प्रतिश्रोतः श्रयद्वस्तु, कया युक्त्या प्रतीयताम् ?॥॥॥

हे प्रभु ! पांदडां, घास, काष्ट विगेरे वस्तु जळना प्रवाहने अनुसरी चाले ते ता युक्तिवाळुं छे, परन्तु तेवो वस्तु सामे प्रवाहे चाले ते कइ युक्तिवडे लोको मानी शके ? ७.

अथवाऽलं मन्दबुद्धिपरीक्षकपरीक्षणः । ममापि कृतमेतेन, वैयात्येन जगत्त्रमो ! ।।८॥

अथवा ता हे जगत्रभु ! मंद बुद्धिवाळा परीक्षकानी परीक्षावडे सर्यु, तेम ज मारे पण आ परीक्षा करवाना कदाग्रह्मथी सर्यु. ८.

यदेव सर्वसंसारिजन्तुरूपविलक्षणम् । परीक्षन्तां कृतिधियस्तदेव तव लक्षणम् ॥९॥

हे प्रभु ! सर्व संसारी जीवोना स्वरूपथी जे कौइ पण विलक्षण होय, ते ज आपनुं देवपणानुं लक्षण छे एम विद्वान जनो विचारो ९. कोधलोभभयाकान्तं, जगदसाद्विलक्षणः। न गोचरो मृदुधियां, वीतराग ! कथश्चन ॥१०॥

हे बीतराग ! (सुर, असुर अने मनुष्यादिक-रूप) आ सर्व जगत् कोध, लोभ अने भयथो व्याप्त छे अने आप तेनाथी विलक्षण हो; तेथी जिनशोसनने नहीं जाणनारा अल्पबुद्धिवाळा प्राणी-ओने आप कोइ पण प्रकारे गोचर (प्रत्यक्ष) नथो. १०.

इति अष्टादशः प्रकाशः १८.



अथ एकोनविंशतितमः प्रकादाः १९.

भगवाननी आज्ञा आराधवाथी ज भगवाननी आराधनो थाय छे, तेथी आज्ञास्तवने स्तुतिकार कहे छे.—

तव चेतिस वर्तेऽहमिति वार्त्ताऽपि दुर्रुभा । मचित्ते वर्तसे चेत्वमलमन्येन केनचित् ।। १ ॥

हे बोतराग ! हुं आपना चित्तमां वर्तुं (रहुं) ए वार्ता ज दुर्लम (असंमिवित) छे, परंतु जो आप मारा चित्तमां वर्त्तों (रहो) तो बीजा काइ पण (प्रभुतादिक आपवा) वहे सर्थुं (आप सिवाय मारे कोइनी जरुर नथी.) १.

निगृह्य कोपतः कांश्रित्, कांश्रितुष्टचाऽनुगृह्य च । प्रतार्यन्ते मृद्धियः, प्रलम्भनपरैः परैः ॥२॥

लोकोने छेतरवामां तत्पर एवा हरिहरादिक अन्य देवो केटलाक (पोताथी प्रतिकूल रहेनार जनो)ने कोधथी शाप-वधादिकवडे निग्रह करीने अने केटलाक (पोताना भक्तजनो) ने प्रसन्नतावडे वर- दान विगेरे आपवाथी अनुग्रह करीने मुग्धबुद्धि-वाळा जनोने छेतरे छे, तेथी आप जेना चित्तमां वर्तता हो ते मनुष्यो ते देवोथी छेतराता नथी, अने तेथी करीने ज आप मारा चित्तमां वर्तता हो तो हुं कृतकृत्य ज छुं. २.

अत्रसन्नात् कथं प्राप्यं, फलमेतदसङ्गतम् ? । चिन्तामण्यादयः कि न, फलन्त्यपि विचेतनाः?॥३॥

राग-द्वेषादिकनो अभाव होवाथी कदापि प्रसन्न नहीं थनारा वीतराग देवथी शी रीते फळ (माक्षादि) पामी शकाय ? आ प्रमाणे कोइ शंका करे तो ते तेनुं कहेबुं अयोग्य छे, केमके चिंतामणि विगेरे विशिष्ट चेतना रहित पदार्थी छुं फळीभूत नथी थता ? अर्थात् चेतना रहित पदार्थी कोइना पर प्रसन्न थता ज नथी, तो पण तेमनुं विधि प्रमाणे आराधन करवाथी तेनुं फळ प्राप्त थाय छे, एवी ज रीते वीतराग पण फळ आपनार कहे-वाय छे. ३.

वीतराग ! सपर्यातस्तवाज्ञापालनं परम् । आज्ञाऽऽराद्धा विराद्धा च, श्विवाय च भवाय च ॥४॥

हे बोतराग ! आपनी सेवा करवा करतां

आज्ञानुं पालन करवुं, ते भावस्तवरूप होबाथी उत्कृष्ट फल्लने आपनार छे, केमके आपनी आज्ञानुं आराधन मोक्षने माटे छे अने आपनी आज्ञानी विराधना संसारने माटे छे. ४.

आकालमियमाज्ञा ते, हेयोपादेयगोचरा । आश्रवः सर्वथा हेय, उपादेयश्च संवरः ॥५॥

हे प्रभु ! हेय अने उपादेय स्वरूपवाली आपनी आ आज्ञा सदाकाळ एक सरखो ज छे, ते आ प्रमाणे—कषाय, विषय, प्रमाद, विगेरे स्वरूपवालो आश्रव सर्व प्रकारे हेय (त्याग करवा लायक) छे अने सत्य, शौच, त्रमा विगेरे स्वरूपवालो संवर सर्व प्रकारे उपादेय (ग्रहण करवा लायक छे.) ५.

आश्रवो भवहेतुः स्यात्, संवरो मोक्षकारणम् । इतीयमाहेती मुष्टिरन्यदस्याः प्रपञ्चनम् ॥६॥

कारण के आश्रव ते संसारनुं कारण छे, अने संवर ते मोक्षनुं कारण छे. आ प्रमाणे आ अर्हत् संबंधी मुष्टि एटले सर्व उपदेशना सारद्भप मूळ ग्रंथि छे. बीजुं अंग-उपांग विगेरे सर्व आनो ज विस्तार छे. ६ इत्याज्ञाराधनपरा, अनन्ताः परिनिर्वेताः । निर्वान्ति चान्ये कचन, निर्वास्यन्ति तथाऽपरे॥७॥

आ प्रमाणे आपनी आज्ञानी आराधनामां तत्पर थयेळा अनंता जीवो पूर्वकाळे मोक्ष पाम्या छे, बीजा केटळाक जीवा वर्तमान समये कोइक ठेकाणे पटले महाविदेहादिकमां मोक्ष पामे छे अने भविष्य काळे पण (अनंत जीवो) मोक्ष पामग्रे. अ

हित्वा प्रसादनादैन्यमेक्यैव त्वदाज्ञया । सर्वथैव विमुच्यन्ते, जन्मिनः कर्मपञ्जरात् ।।८॥

हे वीतराग ! आपनी प्रसन्नताने माटे जे दीनता करवी तेनो त्याग करीने मात्र एक आपनी आज्ञा-वडे ज (आज्ञा आराधवावडे ज) प्राणीओ सर्वथा कर्मरूपी पंजरथकी मुक्त थोय छे. ८.

इति एकोनविंशतितमः प्रकाशः १९.

अथ विंशतितमः प्रकार्शः २०

हवे आशी:स्तव कहे छे एटले इच्छित वस्तुनी प्रार्थना करे छे.—

पादपीठलुठन् मूर्धिन, मयि पादरजस्तव । चिरं निवसतां पुण्यपरमाणुकणोपमम् ।।१॥

हे बीतराग ! आपना पाइपोठमां मस्तकने नमावतां मारा लळाटने वित्रे पुण्यता परमागुना कणोया जेवी आपनो पाइरज चिरकाल (संसारमां हुं रहुं त्यां सुधी) रहां. १.

मद्दशौ त्वन्मुखासक्ते, हर्पशाष्पजलोर्मिभिः । अप्रेक्ष्यप्रेक्षणोद्भतं, क्षणात्क्षालयतां मलम् ॥२॥

हे प्रभु ! पूर्वे नहीं जोवा लायक परस्रो, कुदेव विगेरेने जोवाथी उत्पन्न थयेला पापरूप मळने अ-त्यारे आपना मुखमां आसक थयेलां मारां आ नेत्रो हर्षाश्चना जलतरंगोवडे क्षणवारमां घोइ नांखो. २.

त्वत्पुरो लुठनैर्भयान्मद्भालस्य तपस्त्रिनः । कृतासेव्यप्रणामस्य, प्रायश्चित्तं किणावलिः ॥३॥ हे प्रभु ! प्रथम हरिहरादिक असेव्यने प्रणाम करनारा आ बिचारा (ऋपाना स्थानरूप) मारा ठळाटने आपनी पासे आळोटवाथी (नमवाथो) पडेळी ज्ञतनी श्रेणि ज प्रायश्चितरूप थाओ. ३.

मम त्वदर्शनोद्भुताश्चिरं रोमाश्चकण्टकाः । जुदन्तां चिरकालोत्थामसद्दर्शनवासनाम् ॥४॥

हे वीतराग ! मने आपना द्र्शनथी उत्पन्न ययेळा रोमांचरूपी कंटको चिरकाळथी एटळे अनादि काळना भवभ्रमणथी उत्पन्न थयेळी कुशासननी दुर्वा-सनाने अत्यन्त पीडा करो. (कांटावडे पीडा पाम-वाथी बहार नीकळी जाओ). ४.

त्वद्वक्त्रकान्तिज्योत्स्नासु, निपीतासु सुधास्त्रिव । मदीयैर्लोचनाम्भोजैः, प्राप्यतां निर्निमेषता ॥५॥

हे प्रभु ! अमृतना जेवी आपना मुखनी कांति-रूपी चंद्रज्योत्सना (चांदनी) नुं पान करवाथी मारा लोचनरूपी कमलो निर्निमेषपणाने पामो. (चंद्र-ज्योत्सनानुं पान करवाथी कमलो विकस्वरपणाने पामे छे अने अमृतनुं पान करवाथी नेत्रो निमेष (मटका) रहितपणाने पामे छे.) ५.

त्वदास्यलासिनी नेत्रे, त्वदुपास्तिकरौ करौ । त्वद्गुणश्रोतृणी श्रोत्रे, भ्रयास्तां सर्वदा मम ॥६॥ हे प्रभु ! मारा नेत्रो सर्वदा आपना मुखने जोवामां छालसावाळा थाओ. मारा वे हाथ औपनी पूजा करनारा थाओ अने मारा वे कान आपना गुण श्रवण करनारा थाओ. ई.

कुण्ठाऽपि यदि सोत्कण्ठा, त्वद्गुणग्रहणं प्रति । ममैषा भारती तर्हि, स्वस्त्येतस्यै किमन्यया ? ॥७॥

हे प्रभु ! जा आ मारी वाणी सूक्ष्म अर्थवाळा आगममां स्वलना पाम्या, छतां पण आपना गुण प्रहण करवामां उत्कंठावाळी होय तो आ ज वाणीनुं कल्याण हो. बीजी वाणीवडे हां काम छे ? कांइ ज नहीं. ७.

तव प्रेष्योऽस्मि दासोऽस्मि, सेवकोऽस्म्यस्मि किङ्करः । ओमिति प्रतिपद्यस्व, नाथ ! नातः परं बुवे ॥८॥

हे नाथ ! हुं आपनो प्रेष्य हुं, दास हुं, सेवक हुं अने किंकर हुं, तेथी आप 'ओम्' (आ मारो हें) ए अक्षरने ज मात्र अंगीकार करो, आथी वधारे धन-सुवर्ग-राज्यादिक कांइ एण हुं मांगता नथी. आपनो थवाथी मने सर्व सुखनी प्राप्ति हो. (अहीं प्रेष्य एटले स्वामी जेने पोताना कार्य माटे गमे त्यां मोकले ते, दास एटले वेचातो लोधेलो अने त्रिशुलादिकना चिह्नवाळा करेलो होय ते, सेवक एटले स्वामोनी सेवा करवामां निपुण तथा किंकर एटले मने आज्ञा आपो. हुं ह्युं काम कहं ? एम बालवामां कुशळ होय ते.) ८.

श्रीहेमचन्द्रप्रभवाद् , वीतरागस्तवादितः । कुमारपालभ्रुपालः, प्रामोतु फलमीप्सितम् ॥९॥

श्रोहेमच-द्रसूरिए रचेला आ वीतरागना स्तव (स्तोत्र) थी श्रोकुमारपाल राजा इच्छित फलने पामा ९.

इति विशतितमः प्रकाशः २०.

इति श्रीवीतराग स्तोत्रम्





अथ श्रीमहादेवस्तोत्रम् ।

प्रशान्तं दर्शनं यस्य, सर्वभृताभयप्रदम् । माङ्गल्यं च प्रशस्तं च, शिवस्तेन विभाव्यते ॥ १॥

जेनुं दर्शन शांत छे, सर्व प्राणीओने अभय आप-नारं छे, मांगळिक छे अने प्रशंसापात्र छे, तेथी ते शिव कहेवाय छे. १.

महत्त्वादीश्वरत्वाच, यो महेश्वरतां गतः। राग-द्वेषविनिर्भुक्तं, वन्देऽहं तं महेश्वरम् ।। २ ॥

मोटाईने लीघे अने ऐश्वर्यने लीघे जि महेश्वरपणाने पामेला हे, ते राग-द्वेषथी रहित महेश्वरने हुं वांदुं हुं. २.

महाज्ञानं भवेद् यस्य, लोकालोकप्रकाशकम्। महादया दमो ध्यानं, महादेवः स उच्यते ॥ ३॥ जेने लोकालोकने प्रकाश करनारुं मोटुंः(केवल) ज्ञान होय, तथा जेने मोटी दया, इंद्रियोनुं दमन अने शुभ ध्यान होय, ते ज महादेव कहेवाय हे. ३.

महान्तस्तस्करा ये तु, तिष्ठन्तः स्वशरीरके । निर्जिता येन देवेन, महादेवः स उच्यते ।। ४ ॥

पोताना गरीरने विषे जे मोटा चोरो रहेला छे तेमने जे देवे जीत्या होय, तेज महादेव कहेवाय छे. ४.

रागद्वेषौ महामह्रौ, दुर्जयौ येन निर्जितौ। महादेवं तु तं मन्ये, शेषा वै नामधारकाः ।। ५ ॥

दु:खे करीने जीती शकाय तेवा महा महरूप राग-द्वेषने जेणे जीत्या होय, तेने ज हुं महादेव मानुं हुं. बीजा तो मात्र महादेव पवा नामने ज धारण करनारा छे. ५.

शब्दमात्रो महादेवो, लौकिकानां मते मतः। शब्दतो गुणतश्रेवाऽर्थतोऽपि जिनशासने ॥ ६॥

लौकिक मत(शास्त्र)मां मात्र शब्द(नाम)थी ज महादेव मानेला छे, अने जिनशासनमां शब्दथी, गुणथो अने अर्थथी पण महादेव मानेला छे. ६.

Jain Education International Private & Personal Use Onlyww.jainelibrary.org

शक्तितो व्यक्तितश्चेत्र, विज्ञानं लक्षणं तथा । मोहजालं हतं येन, महादेवः स उच्यते ॥ ७॥

जेने पोतानो शक्तिथी विज्ञान थयुं होय अने व्यक्तिथी (प्रगटपणे) जेनुं छत्तण जोवामां आवतुं होय, तथा जेणे मोहजाछने हणी होय, ते ज महादेव कहेवाय छे. ७.

नमोऽस्तु ते महादेव !, महामदविवर्जित ! महालोभविनिर्भुक्त !, महागुणसमन्वित ! ॥ ८॥

मोटा मद्थी रहित, सोटा लोभथी मुक्त थयेळा, अने महान् गुणोए करीने युक्त हे महादेव ! तमने नमस्कार हो ८.

महारागो महाद्वेषो, महामोहस्तथैव च । कषायश्च हतो येन, महादेव: स उच्यते ॥ ९ ॥

जेले मोटो राग, मोटो द्वेष, मोटो मोह अने कषायी हण्या होय, तेज महादेव कहेवाय छे. ९.

महाकामो हतो येन, महाभयविवर्जितः । महात्रतोपदेशी च, महादेवः स उच्यते ॥ १०॥

जेणे मोटा कामदेवने हण्यो होय, जे महाभय रहित

होय अने जे महाव्रतोनो उपदेश करनार होय, ते ज महादेव कहेवाय के १०.

महाक्रोधो महामानो, महामाया महामदः । महालोभो हतो येन, महादेवः स उच्यते ।। ११॥

ं जेणें महाकोध, महामान, महामाया, महामद (गर्व) अने महालोभने हण्या होय, तेज महादेव कहेवाय छे. ११.

महानन्दो दया यस्य, महाज्ञानी महातपाः । महायोगी महामौनी, महादेवः स उच्यते ।। १२ ॥

जेने महानंद अने दया होय, जे महाज्ञानी, महा-तपस्वी, महायोगी अने महामौनधारी होय, ते ज महादेव कहेवाय छे १२.

महावीर्य महाधेर्य, महाशीलं महागुणः। महामञ्जूक्षमा यस्य, महादेवः स उच्यते ॥ १३॥

जेने महावीर्य, महाधेर्य, महाशील, महागुणो अने मोटी सुन्दर क्षमा होय, ते ज महादेव कहेवाय छे. १३.

स्वयम्भृतं यतो ज्ञानं, लोकालोकप्रकाशकम् । अनन्तवीर्यचारित्रं, स्वयम्भः सोऽभिधीयते ॥ १४॥ जेनाथी लोकालोकने प्रकाश करनार केवलज्ञान, अनंतवीर्य अने अनंतचारित्र पोतानी मेले डत्पन्न थयुं होय, ते ज स्वयंभू कहेवाय छे. १४.

शिवो यसाजिनः प्रोक्तः, शङ्करश्च प्रकीर्तितः । कायोत्सर्गी च पर्यङ्की, स्त्रीशस्त्रादिविवर्जितः ॥ १५ ॥

जेथो करीने जिनेश्वर कायोत्सर्गे रहेला, पर्यकासने रहेला अने स्त्री-शस्त्र विगेरेथी रहित छे, तेथी करोने तेने शिव कह्या छे अने शंकर कह्या छे. १५.

साकारोऽपि ह्यनाकारो, मूर्त्तामूर्त्तस्तथैव च । परमात्मा च बाह्यात्मा, अन्तरात्मा तथैव च ॥ १६॥

जिनेश्वर साकार छतां पण अनाकार छे, मृर्तिमान छतां पण अमूर्त्त छे, तेम ज परवात्मा, बाह्यात्मा अने अंतरात्मारूपे पण छे. १६.

द्र्ञन-ज्ञानयोगेन, परमात्माऽयमव्ययः । परा क्षान्तिरहिंसा च, परमात्मा स उच्यते ॥ १७॥

दर्शन अने ज्ञानना संयोगवडे करीने आ परमात्मा अव्यय (नाश रहित) छे, तेने उत्कृष्ट क्षमा अने अहिंसा छे, तेथो ते परमात्मा कहेवाय छे. १७. परमात्मा सिद्धिसम्प्राप्ती, बाह्यात्मा तु भवान्तरे। अन्तरात्मा भवेद् देह, इत्येषस्त्रिविधः शिवः ॥ १८ ॥

सिद्धिनी प्राप्ति थाय त्यारे परमात्मा कहेवाय छे, भवांतरने विषे बाह्यात्मा कहेवाय छे अने प्रशीरने विषे अन्तरात्मा कहेवाय छे. आ प्रमाणे त्रण प्रकारे शिव कहेवाय छे. १८.

सकलो दोषसम्पूर्णी, निष्कलो दोषवर्जितः । पश्चदेहविनिर्मुक्तः, सम्प्राप्तः परमं पदम् ॥ १९॥

जे कला सहित होय ते होषथी भरेलो होय छे, अने जे कला रहित होय ते दोष रहित होय छे; परंतु आ जिनेश्वर तो पांचे शरीरथी मुक्त थइने सिद्धिपदने पामेला छे. १९.

एकमूर्त्तिस्त्रयो भागा, ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः । तान्येव पुनरुक्तानि, ज्ञान-चारित्र-दर्शनात् ॥ २० ॥

ब्रह्मा, विष्णु अने महेश्वर ए एक मूर्तिना त्रण विभाग छे. तेने ज झान, चारित्र अने दर्शन कह्यां छे. २०.

एकमूर्त्तिस्त्रयो भागा, ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वराः । परस्परं विभिन्नानामेकमूर्त्तिः कथं भवेत ? ॥ २१ ॥ जो ब्रह्मा, विष्णु अने महेश्वर ए एक मूर्तिना त्रण विभाग छे, तो परस्पर ज़्दानी एक मूर्त्ति शी रीते होइ शके ? २१.

कार्यं विष्णुः क्रिया ब्रह्मा, कारणं तु महेश्वरः । कार्य-कारणसम्पन्ना, एकमूर्त्तिः कथं भवेत् ? ॥ २२ ॥

जो विष्णु कार्य होय, ब्रह्मा क्रिया होय अने महे-श्वर कारण होय, तो कार्य अने कारणथी बनेळी एक ज मूर्ति केम संभवे ? २२.

प्रजापतिसुतो ब्रह्मा, माता पद्मावती स्मृता । अभिजिज्जन्मनक्षत्रमेकमूर्त्तिः कथं भवेत् ? ।। २३ ।।

ब्रह्मा प्रजापितनो पुत्र छे अने तेनी (ब्रह्मानी) माता पद्मादती कहेली छे, तथा तेनुं जन्म नक्षत्र अभि-- जित् छे, तो तेओनी एक मूर्त्ति केम संभवे ? २३.

वसुदेवसुतो विष्णुर्माता च देवकी स्मृता। रोहिणी जन्मनक्षत्रमेकसूर्त्तिः कथं भवेत ? ॥ २४ ॥

विष्णु वसुदेवनो पुत्र छे, तेनी माता देवकी कहेली छे, अने तेनुं जन्म नक्षत्र रोहिणी छे, तो तेओनी एक मुर्त्ति केम संभवे ? २४. पेढालस्य सुतो रुद्रो, माता च सत्यकी स्मृता । मूलं च जन्मनक्षत्रमेकमूर्त्तिः कथं भवेत् ? ॥ २५॥

रुद्र (महादेव) पेढालनो पुत्र छे, तेनी माता सत्यकी छे, अने तेनुं जन्म नक्षत्र मूल छे, तो तेओनी एक मूर्त्ति केम संभवे ? २५.

रक्तवर्णो भवेद् ब्रह्मा, श्वेतवर्णो महेश्वरः । कृष्णवर्णो भवेद् विष्णुरेकमूर्त्तः कथं भवेत् ? ।। २६ ॥

ब्रह्मानो रक्त वर्ण छे, महेश्वरनो श्वेत छे अने विष्णुनो ऋष्ण वर्ण छे, तो तेओनी एक मूर्ति केम संभवे ? २६.

अक्षसूत्री भवेद् ब्रह्मा, द्वितीयः शूलघारकः । तृतीयः शृहुचकाङ्क, एकमूर्तिः कथं भवेत् ? ॥ २७॥

ब्रह्मा अक्षसूत्र(माला)ने धारण करनार छे, बीजा (महेश्वर) त्रिशूलने धारण करे छे अने त्रीजा (विष्णु) शंख-चक्रने धारण करे छे, तो तेमनी एक मूर्त्ति केम संभवे ? २७.

चतुर्मुखो भवेद् ब्रह्मा, त्रिनेत्रोऽथ महेश्वरः । चतुर्भुजो भवेद् विष्णुरेकमूर्त्तिः कथं भवेत् ? ॥ २८ ॥ ब्रह्माने चार मुख छे, महेश्वरने त्रण नेत्र छे अने विष्णुने चार भुजा छे, तो तेमनी एक मूर्ति केम संभवे? २८.

मथुरायां जातो ब्रह्मा, राजगृहे महेश्वरः। द्वारामत्यामभृद् विष्णुरेकमूर्त्तिः कथं भवेत्?॥ २९॥

ब्रह्मानो मथुरा नगरीमां जन्म थयो, राजगृहमां महे-श्वरको जन्म थयो अने चिन्णुनो जन्म द्वारकामां थयो, तो तेमनी एक मूर्त्ति केम संभवे ? २९.

हंसयानो भवेद् ब्रह्मा, वृषयानो महेश्वरः। गरुडयानो भवेद् विष्णुरेकमुर्त्तिः कथं भवेत् ? ॥ ३० ॥

ब्रह्मानुं वाहन हस छे, महेश्वरनुं वाहन वृषम छे अने विष्णुनुं वाहन गरुड छे, तो तेमनी एक मूर्ति केम संभवे ? ३०.

पद्महस्तो भवेद् ब्रह्मा, शूलपाणिर्महेश्वरः । चक्रपाणिर्भवेद् विष्णुरेकमूर्त्तिः कथं भवेत् ? ॥ ३१॥

ब्रह्माना हाथमां एक छे, महेश्वरना हाथमां त्रिशूल छे अने विष्णुना हाथमां चक्र छे, तो तेमनी एक मूर्ति केम संभवे ? \$१.

कृते जातो भवेद् ब्रह्मा, त्रेतायां च महेश्वरः । द्वापरे जनितो विष्णुरेकमूर्त्तिः कथं भवेत् ? ॥ ३२ ॥

ब्रह्मानो जन्म कृतयुगमां छे, महेश्वरनो जन्म त्रेता-युगमां छे अने विष्णुना जन्म द्वापर युगमां छे, तो तेमनी एक मूर्त्ति केम संभवे ? ३२.

ज्ञानं विष्णुः सदा प्रोक्तं, चारित्रं ब्रह्म उच्यते । सम्यक्त्वं तु शिवं प्रोक्तमईन्मृर्त्तिस्त्रयात्मिका ।। ३३ ॥

सदा ज्ञान ते विष्णु, चारित्र ते ब्रह्मा अने सम्यक्त ते शिव एम कह्युं छे, तेथी अरिहंतनी मूर्त्ति ज त्रण प्रकारनी (ब्रह्मा, म्हेश्बर अने विष्णुरूप) कही शकाय छे. ३३.

क्षिति–जल–पवन–हुताशन-यजमाना-ऽऽकाश-सोम-सूर्याख्याः । इत्येतेऽष्टौ भगवति, वीतरागे गुणा मताः ।। ३४ ॥

पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, यजमान, आकाश, चंद्र-अने सूर्य आ आठ गुणो वीतराग भगवानने विषे मानेला हे. ३४. क्षितिरित्युच्यते क्षान्तिर्जलं या च प्रसन्नता । निःसङ्गता भवेद् वायुर्हुताशो योग उच्यते ॥ ३५ ॥

पृथ्वी एटले क्षमा कहेवाय हे, जल एप्रसन्नता कहेवाय हे. वासु ए नि:संगएणुं हे, अने अग्नि ए योग कहेवाय हे. ३५.

यजमानो भवेदात्मा, तपोदानदयादिभिः। अलेपकत्वादाकाशसङ्काशः सोऽभिधीयते ॥ ३६॥

तप, दान अने दयादिकवडे आत्मा ज यजमान कहेवाय छे, अलेपपणुं होवाथी ते आत्मा ज (जिनेश्वर) आकाश जेवा कहेवाय छे. ३६.

सौम्यमुर्त्तिरुचिश्रन्द्रो, वीतरागः समीक्ष्यते । ज्ञानप्रकाशकत्वेन, आदित्यः सोऽभिधीयते ।। ३७ ॥

वीतराग भगवान् सौम्य मूर्त्तिनी कांतिवाला होवाथी चन्द्र जेवा देखाय छे, अने ज्ञाननो प्रकाश करनार होवाथी ते ज सूर्य जेवा कहेवाय छे. ३७.

्पुण्यपापविनिर्मुक्तो, रागद्वेषविवर्जितः । श्रीअर्हेद्भचो नमस्कारः, कर्तब्यः शिवमिच्छता ॥३८॥

मोक्षनी इच्छावाला प्राणीए पुण्य-पापथी मुक्त थयेला

Jain Education International Private & Personal Use Onlyww.jainelibrary.org

अने राग-द्वेषथी रहित थयेला श्री जिनेश्वरोने ज नम-स्कार करवा लायक छे. ३८.

अकारेण भवेद् विष्णु, रेफे ब्रह्मा व्यवस्थितः । हकारेण हरः प्रोक्तस्तस्यान्ते परमं पदम् ॥ ३९॥

अकारे करीने विष्णु कहेला छे, रेफने विषे ब्रह्मा रहेल छे अने हकारवडे हर (महेश्वर) कहेला छे, तथा तेने अंते अनुस्वार छे ते मोक्षपद छे. (अर्ह) ३९.

अकार आदिधर्मस्य, आदिमोक्षप्रदेशकः । स्वरूपं परमं ज्ञानमकारस्तेन उच्यते ।। ४० ॥

अकार अक्षर आदि धर्मने कहेनार छे, आदि मोक्षने देखाडनार छे अने आत्मस्वरूपने विषे केवल-ज्ञानने उत्पन्न करनार छे, तेथी ते अकार (अ) कहेवाय छे. ४०.

रूपिद्रव्यस्वरूपं वा, दृष्ट्वा ज्ञानेन चक्षुषा । दृष्टं लोकमलोकं वा, रकारस्तेन उच्यते ॥ ४१ ॥

ज्ञानचक्षुवडे रूपी द्रव्यतुं स्वरूप जोयुं छे, तथा लोक अने अलोकने जोया छे, तथी ते रकार (र्)कहेवाय छे. ४१.

हता रागाश्च द्वेषाश्च, हता मोहपरीपहाः। हतानि येन कर्माणि, हकारस्तेन उच्यते ॥ ४२॥ जेथी करीने राग-द्वेष हण्या छे, मोह अने परी-षहों हण्या छे तथा आठे कर्मोने हण्या छे; तेथी करीने ते हकार (ह) कहेबाय छे. ४२.

सन्तोषेणाभिसम्पूर्णः, प्रातिहार्याष्टकेन च। ज्ञात्वा पुण्यं च पापं च, नकारस्तेन उच्यते ॥ ४३ ॥

पुण्य-पापने जाणीने संतोषवडे अने आठ प्रातिहार्य-वडे संपूर्ण थया छे तेथी करीने नकार (न्) कहे-वाय छे. (अर्हन्) ४३.

भवबीजाङ्गुरजनना, रागाद्याः क्षयमुपागता यस्य । ब्रह्मा वा विष्णुर्वा, हरो जिनो वा नमस्तस्मै ॥ ४४ ॥

संसाररूपी बीजना अंकुरने उत्पन्न करनारा रागा-दिक जेना त्तय पाम्या होय, ते ब्रह्मा होय, विष्णु होय, महेश्वर होय के जिनेश्वरो होय गमे ते होय तेने ज नमस्कार थाओ. ४४.

🛮 इति श्रीमहादेवस्तोत्रम् ॥

श्रीकर्मग्रंथ (४) मूळ

छेल्लामां छेल्ली ढबे तैयार करेल श्री देवे-न्द्रसरिकृत स्वोपज्ञ टीकायुक्त वे प्राचीन ताड-पत्रीओ अने त्रण प्राचीन हस्तलेखीत प्रतो उप-रथी. माने महाराज श्रीचत्रविजयजी तथा तेमना विद्वान शिष्य सुनि महाराज श्रीपुण्यविजयजी महाराजे काळजीपूर्वक संशोधन करी आ ग्रंथ महामहेनते तैयार कर्यो छे एटले अगाउ प्रकट थयेल आवृत्तिनी अग्रद्धिओ आमां रहेवा पामी नथी. कर्मग्रंथना अभ्या-सीओ माटे आ ग्रंथ अति उत्तम ग्रंथ मनाय छे. मळेल मदद थएल खर्चमांथी बाद करता ओछी र्किमते ज आ ग्रंथ वेचवामां आवे छे. एटले मुल्य मात्र रु. २-०-० ज राखेल छे. मात्र नामनी ज नकलो सीलीकमां छे.

लखो-श्रीजैन त्रात्मानंद सभा-भावनगरः

श्री बृहतकल्पसूत्रम्

मुनिओना धार्मिक आचारो अने रीत-रिवाजो शुं छे ? शा कारणथी योजाया ? द्रव्यः क्षेत्रः काळः भाव बदलाता दीर्घदर्शी साध महाराजोए तेमां केवं परिवर्तन करेल छे ? छेदसूत्र माटे जैन समाजनी यूं मान्यता हे ? बगेरे घणी उपयोगी बाबतो आ ग्रंथमां आवेल छे. पुस्तकना आरंभमां विद्वान मुनिराज श्री पुरुयविजयजी महाराजे प्रस्तावना विस्तारथी आपी ग्रंथनी गंभीरता मचोट रीते समजावी हो. निर्णयसागर प्रेसमां छापी सुंदर बाइंडींमथी ग्रंथने शोभाववामां आवेल छे. छतां मृल्य रु. ४-०-० मात्र.

> त्तको-श्रीजैन श्रात्मानंद सभा भावनगर.

श्री वसुर्देवहिन्डी खंड पहेलो

पुस्तक १ छं अने बीजुं.

जैनोना प्राचीनमां प्राचीन कथासाहित्य तरीके प्रमाणभूत मनातो आ ग्रंथ चार वर्षना सतत परिश्रमथी विद्वान मुनि श्रीचतुर-विजयजी तथा तेमना शिष्य मुनि पुण्य-विजयजी महाराजे तहन शुद्ध रीते तैयार कर्यों छे. मुख्य नीचे प्रमाणे:—

वसुदेव हिन्डी. प्रथम खंड पु. १ छुं रु. ३-८-०

,, ,, २ जुं रु. ३-८-०

लखो-श्रीजैन आत्मानंद सभा भावनगर. •

[सर्वेनुं पोस्टेज जुदुं.]

श्री जैन आत्मानंद शताब्दि सिरिझ तरफथी प्रकाशित थयेला-थतां पुस्तको.

8	श्री चीत्राग	महादेव-	स्तोत्र ।	मूल	0-2-0
2	प्राकृत द्याकर	ण (अष्टम	। ध्याय	सूत्रपाठ)	0-8-0
180	श्रीवीतरागस्त	ोत्र मूल	साथे	गुजराती	
	भाषांतर.				0-3-0

४ श्री विजयानंदसूरि जीवन चरित्र. ०-५-०

सीरीझना छपाता प्रन्थो.

१ चारित्र पूजा-पंचतीर्थ पूजा, पंचपरमेष्ठि पूजा, (गुजराती टाइपपां)

२ नवस्मरणादि स्तोत्र सन्दोह.

(अपूर्व स्तोत्रोनो खजानो)

३ त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र दशे पर्व. (मूळ)

४ धातुपारायण.

५ वैराग्य कल्पलता. (उ. श्रीयशोविजयजी)